॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

अक्टूबर 2018 वर्ष 21, अंक 10
विक्रमी सम्वत् 2075
एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 20

श्रेष्ठ धन की कामना

❒ महात्मा चैतन्यमुनि

संसार में बिना कामना के कोई व्यक्ति रह ही नहीं सकता है मगर देखना यह होता है कि कामना किस वस्तु की और किस भावना से की गई है। कामना तो करनी ही मगर वे कामनाएँ सत्य होनी चाहिए। वेद में भी कहा है-सत्या: सन्तु यजमानस्य कामा:।। संसार में जीवन निर्वाह करने के लिए बहुत सी वस्तुओं की आवश्यकता का होना स्वाभाविक ही है। अपने पूर्ण पुरुषार्थ से इच्छित वस्तुओं को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए और सहायता के लिए प्रभु को पुकारना चाहिए क्योंकि वास्तव में वहीं समस्त सम्पदाओं का मालिक है। वेद में कहा गया है-

भूरि त इन्द्र वीर्यं तव स्मस्यस्य स्तोतुर्मघवन्कामममा पृण।
अनु ते द्यौर्बृहती वीर्य मम इयं च ते पृथिवी नेम ओजसे॥

हे इन्द्र प्रभु आपका बल व पराक्रम बहुत अधिक है अर्थात् हमारा पालन-पोषण करने वाले आप ही हैं। हम भी आपके ही हैं सो आपका बल हमारा रक्षण क्यों नहीं करेगा? मैं जो आपका स्तोता हूँ, अत: मेरी कामना को पूरी कीजिए। आपके पास ऐश्वर्य की कमी नहीं और मैं आपका स्तवन करता हुआ अपने को पात्र बनाने का प्रयत्न करता हूँ अत: आप मुझे ऐश्वर्य प्रदान करने की कृपा कीजिए। विशाल आकाश आपकी शक्ति को ही आदृत करता है। इस आकाश में स्थित एक-एक लोक आपकी ही महिमा का प्रतिपादन कर रहा है, यह पृथिवी आप ही के ओज के लिए नतमस्तक होती है.....द्युलोक भी आपकी ही महिमा को कह रहा है..... उस परमेश्वर्यशाली इन्द्र से ही व्यक्ति को कामना व प्रार्थना करनी चाहिए। वेद में प्रार्थना की गई है-

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्‌यमानम् वाच: सुदिनत्वमन्हाम्॥
(ऋ.2-21-6)

हे (इन्द्र) परमैश्वर्यशाली प्रभो! श्रेष्ठानि द्रविणानि अस्मे धेहि) हमारे लिए श्रेष्ठ धनों का धारण करिए। सबसे प्रथम तो (दक्षस्य) कार्यों को करने में कुशल पुरुष की (चित्तिम्) चेतना हमें प्राप्त कराइए। हम कभी भी कर्म मार्ग में कुण्ठ-मस्तिष्क न हो जाएँ बल्कि हम प्रत्येक समस्या को सुलझाकर सदा ही आगे बढ़ने वाले हों। (सुभगत्वम्) हमें सौभाग्यसम्पन्न बनाइए अर्थात् हमारे प्रत्येक कार्य से हमें यश और श्री प्राप्त हो। (रयीणां पोषम्) धनों के पोषण हमें प्राप्त कराइए। हम जीवन यात्रा के लिए आवश्यक धनों का पोषण करने वाले हों, (तनुनाम् अरिष्टिम्) शरीरों की अहिंसा को हमें प्राप्त कराइए, अर्थात् हमारा स्वास्थ्य सदा ही ठीक रहे, (वाच: स्वाद्‌मानम्) हमें वाणी का माधुर्य प्रदान करें, (अन्हाम् सुदिनत्वम्) दिनों की शोभनता को दीजिए अर्थात् हमारा प्रत्येक दिन बहुत सन्दर ढंग से व्यतीत हो... मन्त्र में धन की कामना तो की गई है मगर साथ ही प्रार्थना यह भी की गई कि हम कुशलता से कार्यों को करने वाले हों, हमारे काम सौभाग्य सम्पन्न हों, धनों की कमी न हो, हमारी शारीरिक स्वस्थता बनी रहे, हमारी वाणी में माधुर्य हो और हमारा एक नहीं बल्कि सभी दिन सुन्दर ढंग सग व्यतीत हों..... वास्तव में यह सब तभी होगा जब हमारे घर में श्रेष्ठ धन आए। हमारे शास्त्रों में धन की शुद्धि को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। मनु महाराज ने भी धन की पवित्रता को प्रमुख कहा है-

सर्वेषामेव शौचनामर्थशौचं परं स्मृतम्। योऽर्थे शुचिर्हि स शुचिर्न मृद्वारिशुचि: शुचि:॥ (मनु.05-106) सभी प्रकार की शुद्धियों में धन सम्बन्धी शुद्धि सबसे मुख्य है। जो मनुष्य धन के विषय में शुद्ध है, वास्तव में वही शुद्ध है-मिट्टी और जल से शुद्ध हुआ यथार्थ में शुद्ध नहीं है। वेद में इसी प्रकार के पवित्र धन की कामना की गई है जो-एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भर।। (ऋ 01-08-1) हे (इन्द्र) परमैश्वर्यशाली प्रभो! (ऊतये) हमारे रक्षण के लिए (रयिम्) धन को (आभर) सब प्रकार से, उत्तम मार्गो से, उत्तम साधनों से प्राप्त कराइए। वह धन ऐसा हो कि उसे हम (सानसिम्) सबके साथ बांटकर खाएँ, यह धन (सजित्वानम्) हमारी सभी आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाला हो (सदासहम्), यह धन हमारे काम, क्रोधादि शत्रुओं का भी पराभव करने वाला हो, हम कहीं धन का दास बनकर कामनाओं के दास ही न बन जाएँ इसलिए हे प्रभु हमारा यह धन (वर्षिष्ठम्) अतिशयेन संवृद्ध हो.... यह बढ़ा हुआ धन हमें बढ़ाने वाला हो.... हम पर सुखों की वर्षा करने वाला हो....

मन्त्र में पहली बात कही गई कि (सानसिम) हमारे पास जो धन

(शेष पृष्ठ 17 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आर्य नेता आर्य रत्नः पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी

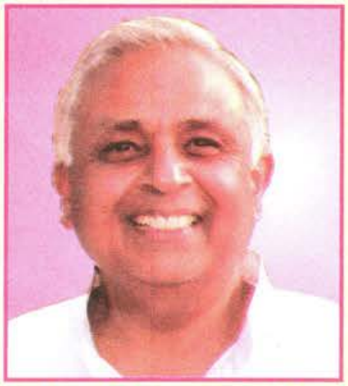

❑ डी.ए.वी. नाम संस्था हि, दयानन्देन शोभिता। एंग्लो वैदिक-ज्ञानं च, प्राच्य-नवीन-संगतिः॥
अर्थ- डी.ए.वी. नाम की शिक्षा संस्था ऋषि दयानन्द के नाम से सुशोभित है।
'दयानन्द एंग्लो वैदिक' प्राचीन और अर्वाचीन (ज्ञान-विज्ञान की) संगति है।

❑ शिक्षा संस्कार-सेवा च, यज्ञ-योग-तपो-विद्या। पठनं क्रीडनं गीतं, सर्वमत्र सुशोभते॥
अर्थ-इस (डी.ए.वी. शिक्षा संस्था में) शिक्षा, संस्कार, सेवा, यज्ञ, योग, तप, वैदिक विद्या (धर्म शिक्षा), पढ़ना खेलना और संगति आदि समस्त गुण सुशोभित हो रहे हैं।

❑ 'हंसराजो' महात्मा वै, ऋषिभक्तो धर्म प्रियः। त्यागमूर्तिः विद्यारागी, डी.ए.वी.-वंश-भूषणः॥
अर्थ-महात्मा हंसराज निश्चय से ऋषिभक्त, वैदिक धर्म प्रिय त्यागमूर्ति, विद्यारागी और डी.ए.वी. कुल की महान विभूति हैं।

❑ आचार्यो में दयानन्दः, सर्वस्वं वेद-जीवनम्। लेखको मृदुभाषी च, 'आनन्द स्वामि' राजते॥
अर्थ-महात्मा आनन्द स्वामी, जो ऋषि दयानन्द मेरे गुरु, मेरा सर्वस्व वेदाधारित जीवन है, वे लेखक और मृदुभाषी (आर्य जगत् में) सदा सुशोभित रहे।

❑ पुण्यकर्म-महावंशः आनन्द-गुण-कीर्तनः। दान-धर्म-विद्या-योगः, सूरी-कुलः सुशोभते॥
अर्थ-महात्मा आनन्द स्वामी का यह सूरी कुल, जो पुण्य कर्मों को करने वाला महान वंश है, सच्चिदानन्द ईश्वर तथा आनन्द स्वामी के गुणों का कीर्तन करने वाला, दान, धर्म, विद्या, योग (यज्ञादि) श्रेष्ठ कर्मों के कारण आर्य जगत् में सुशोभित हो रहा है।

❑ 'श्री पूनम' विद्यामूर्तिः, विद्योत्तम, विद्योदधिः। प्रधान पद-प्राप्तोऽयं, 'श्री सूरी' शोभते सदा॥
अर्थ- (महात्मा आनन्द स्वामी के महान राष्ट्रभक्त वंश में) श्री पूनम सूरी जो विद्या की मूर्ति, विद्या में सर्वश्रेष्ठ, विद्या के रत्नाकर हैं। डी.ए.वी. और प्रादेशिक सभा के गौरवशाली प्रधान पद को प्राप्त करके सुशोभित हो रहे हैं।

❑ आर्यरत्नो नरेन्द्रोऽयं, सर्वप्रियः नरोत्तमः। कर्मयोगी क्रियाशीलः, 'श्री सूरी' शोभते सदा॥
अर्थ-श्री पूनम सूरी आर्यरत्न (नर+इन्द्रः=नरों में श्रेष्ठ, ऐश्वर्यशाली तथा श्री नरेन्द्र मोदी प्रधानमन्त्री के प्रिय गुणग्राही) सबके प्रिय, नरों में उत्तम, कर्म योगी, क्रियाशील (अपनी क्रिया शीलता से डी.ए.वी. को गौरवान्वित करने वाले) श्री सूरी हमेशा सुशोभित हो रहे हैं।

❑ कुलमणिः नृमणिश्चैव, डी.ए.वी. कुल-भूषितः। प्रादेशिक सभा-मान्यः, 'श्री सूरी' शोभते सदा॥
अर्थ-श्री पूनम सूरी अपने महान वंश के कुलमणि, मानवों में मणितुल्य डी.ए.वी. परिवार की तथा प्रादेशिक सभा की मानवीय विभूति श्री पूनम सूरी इस आर्यसमाज में सुशोभित हो रहे हैं।

❑ आर्यभाव-सुबोधोऽयं, यज्ञकर्म-सुदीक्षितः। परिवारो महाश्रेष्ठः, 'श्री सूरी' शोभते सदा॥
अर्थ-आर्य विचारो के महान बोध और यज्ञकर्म से संस्कारित यह महान श्रेष्ठ श्री सूरी जी का परिवार हमेशा सुशोभित हो रहा है।

❑ 'सुशीला' जननी सौम्या, धर्मप्रियः पिता ननु। देवी भार्या 'मनी' जाता, 'योगी' तु गुणवान् सुतः॥
अर्थ-श्री पूनम सूरी की पूज्या सौम्य स्वभाव वाली माता सुशीला सूरी और वैदिक धर्म प्रिय राष्ट्र भक्त पिता थे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती मनी और गुणवान् सुपुत्र योगी है।

❑ आर्यनेता यशोमूर्तिः, धर्म-संस्कृत-पालकः। देशभक्तः सदा भूयात्, निरामयः सुखी ननु॥
अर्थ-आर्यनेता, यश की मूर्ति, धर्मशिक्षा और संस्कृत भाषा का संरक्षण करने वाले देशभक्त श्री पूनम सूरी सदा निरोग और निश्चय से सुखी हों।

रचयिता आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा

छोटे लक्ष्य से कभी पूर्णता प्राप्त नहीं होती

लक्ष्य हमेशा ऊंचा बनाएं। उद्देश्य कभी छोटा नहीं होना चाहिए, योजना भी छोटी नहीं होनी चाहिए। छोटे लक्ष्य और छोटी योजना से उत्साह नहीं जागता। वे कभी पूर्णता को प्राप्त नहीं होते। बड़ी योजनाएं और बड़े लक्ष्य पूरे होते हैं क्योंकि उनके पीछे उत्साह और प्रेरणा का बल होता है। विश्व के प्रख्यात चिंतकों ने यही कहा-ऊपर की ओर चलो, लक्ष्य को बड़ा बनाते चलो। यदि किसी से पूछा जाए-तुम्हारा लक्ष्य क्या है? उसका उत्तर होगा-डाक्टर बनना है, अध्यापक बनना है, या सफल व्यक्ति बनना है। वस्तुत: यह लक्ष्य नहीं है, यह एक यात्रा है, पड़ाव है। यदि एक वानप्रस्थी यह सोचता है-मैं संन्यासी बन गया, सब कुछ हो गया तो वह बड़ी भूल करता है। संन्यासी बनना यदि लक्ष्य है तो संन्यास-दीक्षा के साथ ही उसकी प्राप्ति हो जाती है। साधना करने या बैरागी बनने की जरूरत ही नहीं है। चक्रवर्ती भरत ने दीक्षा भी नहीं ली, वे अपने घर बैठे-बैठे ही बैरागी बन गए। वास्तव में संन्यासी बनना बहुत छोटा लक्ष्य है।

हम इस विषय को गंभीरता से लें। संन्यासी बनना, मुमुक्षु बनना लक्ष्य नहीं है। ये सब पड़ाव हैं। लक्ष्य है आत्मा की उपलब्धि। एक वानप्रस्थी भी इस लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है, एक साधक भी इसे सरलता से प्राप्त कर सकता है। हम पड़ावों पर ज्यादा अटक जाते हैं किन्तु पड़ाव लक्ष्य नहीं है। साधक की भूमिका एक पड़ाव है। व्रती साधक की भूमिका एक पड़ाव है। उससे अगला पड़ाव है सन्यास की भूमिका। बैरागी की भूमिका एक पड़ाव है। जो मंजिल की ओर ले जाते हैं। हम इन पड़ावों को पूरा करते-करते आगे बढ़ते हैं और बढ़ते ही चले जाते हैं, तो मंजिल उपलब्ध होती है। यदि हमारा लक्ष्य छोटा होगा तो हम महान लक्ष्य को नहीं पा सकेंगे।

हम इसे दूसरे संदर्भ में देखें। एक व्यक्ति बड़े लक्ष्य के साथ चला। कुछ आवरण हटा, एक विवर हो गया, आत्मा की कोई झलक मिल गई। वह आगे चल पड़ा किन्तु कोई ऐसी काई छा गई, मोह या मूर्च्छा की गहरी काई सामने आ गई। उसे तोड़ना या भेद पाना बहुत कठिन है। कभी-कभी ऐसा होता है कि एक व्यक्ति सोचता है-मैं सन्सायी बनूं, मोह-माया को छोड़ दूं। उसके मन में यह विचार आता है और वह इस दिशा में चल पड़ता है किंतु जब मोह की सघन परत आड़े आती है, व्यक्ति लक्ष्य से भटक जाता हैं। यह स्थिति इसलिए है कि उसका पुरुषार्थ मंद हो जाता है।

ऋषियों ने कहा-व्यक्ति स्वयं अपने भाग्य का विधाता है। व्यक्ति के भाग्य की डोर व्यक्ति के अपने हाथ में है लेकिन वह तब है जब सही अर्थ में पुरुषार्थ सक्रिय रहे। यदि पुरुषार्थ गलत हो जाए तो अपने दुर्भाग्य का विधाता भी व्यक्ति स्वयं बन जाता है। यदि व्यक्ति पुरुषार्थ न करे, आलसी बन जाए तो सब कुछ खराब हो जाता है। कर्मवाद को माननेवाला इस तथ्य को समझे। भाग्य का उदय होने वाला है किन्तु यदि उसके अनुरूप पुरुषार्थ नहीं किया गया तो भाग्य का उदय भी रूक जाएगा। यदि गलत पुरुषार्थ कर लिया तो भाग्य का उदय रूक जाएगा। हम इस बात पर ध्यान दें-आलस्य न हो, गलत पुरुषार्थ न हो, सही पुरुषार्थ निरंतर चलता रहे। हाथ पर हाथ रखकर बैठने से पेट नहीं भरता। रसोई तैयार है किन्तु भूख तभी मिटेगी जब हम खाने के लिए पुरुषार्थ करेंगे। जो भाग्यवादी हैं, वे निराश होकर बैठ सकते हैं किन्तु कर्मवादी कभी निराश होकर नहीं बैठता। उसे अपने पुरुषार्थ पर विश्वास होता है।

मूल बात है-प्रज्ञा आत्मा के साथ जुड़ी हुई है या नहीं? यदि हम आत्मा के साथ जुड़े हुए हैं तो हमारा पुरुषार्थ सही दिशा में होगा। यदि हम आत्मा के साथ नहीं शरीर के साथ जुड़े हुए हैं तो पुरुषार्थ की दिशा सही नहीं रह पाएगी। संन्यासी जीवन हो पुरुषार्थ का सही दिशा में नियोजन नहीं है तो हम अपने लक्ष्य में सफल नहीं हो पाएंगे। हम शरीर के साथ जुड़े हुए हैं, जिसका अर्थ है, हम नितांत भौतिकवादी बन गए, नास्तिक बन गए। हम शरीर को पालते हैं किन्तु उसे सब कुछ मानकर नहीं चलते। सब कुछ है आत्मा। इस दृष्टिकोण का आत्मसात होना ही प्रभु दर्शन है। इस स्थिति में ही आत्मप्रज्ञा जागती है, व्यक्ति विषाद से मुक्ति पा लेता है। जितना विषाद होता है, वह अनात्म प्रज्ञा में होता है। जिसकी प्रज्ञा आत्मा के साथ जुड़ जाती है, उसे कोई दु:खी नहीं बना सकता। हम एक कसौटी को सामने रखें। हम कुछ भी करें तो यह सोचें मेरे इस कार्य से आत्मा का कुछ बिगड़ा या नहीं? हमारे कार्य को कोई देखता है या नहीं देखता, हमें कोई कुछ कहता है या नहीं कहता, यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना महत्वपूर्ण है-इस कसौटी का सामने बने रहना। जो इस कसौटी को सामने रखता है, उसे कोई दु:खी नहीं बना सकता। ऋषियों ने महत्वपूर्ण सूत्र दिया-आत्मप्रज्ञ बनो। जब तक आत्मप्रज्ञ नहीं बनेगें, विषाद से मुक्ति नहीं मिलेगी। धर्म के क्षेत्र में प्रवेश करने वाला सबसे पहले आत्मा को जाने। जो आत्मवादी हैं, कर्म एंव कर्मफल को मानते हैं, उनके लिए आत्मा के सथ जुड़े रहने का दर्शन सहज प्राप्त है।

अजय टंकारावाला

टंकारा बोधोत्सव 2019

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष 2019 में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्री के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन रविवार, सोमवार, मंगलवार 03, 04, 05 मार्च 2019 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथिया अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी। व्यवस्था करने हेतु अपने आने से पूर्व लिखित सूचना अवश्यक देवे, कितने ऋषिभक्त आ रहे है संख्या सहित सूचित करें।

– रामनाथ सहगल, मन्त्री

परस्परतन्त्र

❒ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

यह ठीक है कि मनुष्य पाणिनी अष्टाध्यायी के सूक्त ''स्वतन्त्र कर्ता'' के अनुसार अपने द्वारा संपादित किसी भी कार्य को करने, ना करने वा किसी अन्य प्रकार से करने के लिए स्वतन्त्र होने के कारण स्वतन्त्रकर्ता कहलाता है और इसीलिए अपने द्वारा किए कर्मों के फल को भोगने के लिए ''अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'' के कर्मपुल सिद्धांत के अनुसार ईश्वर न्याय व्यवस्था में उनका भोक्ता भी होता है। महर्षि देव दयानन्द आर्यसमाज के नियमों में बड़े स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं ''सभी मनुष्य सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहें किन्तु प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।'' व्यक्तिगत स्वाधीनता की सीमा जब सामाजिक सर्वहितकारी नियमों को पालने के लिए पराधीनता में परिवर्तित हो जाती है इसे ही परस्परतन्त्रता कहते हैं।

वैसे तो मनुष्य का तन एक अनमोल साधन के रूप में हमें अपने पूर्वजन्मों के कर्मों के फलों के आधार पर ईश्वरीय न्यायव्यवस्था के अन्तर्गत मिलता है। इस अनमोल साधन की विशेषता भोग के साथ-साथ कर्म की स्वतन्त्रता होती है। लेकिन यदि यह कर्म की स्वतन्त्रता हमें हमारे मार्ग से विमुख करके मनुष्य जीवन के लक्ष्य अर्थात् मोक्ष प्राप्ति से भटका दे तो हम ''मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति'' मनुष्य के रूप में पैदा होकर भी पशुओं के समान केवल कर्मभोग भोगते हुए विचरण करते हैं और पुनः जन्मजाल के बंधन में ही बंध कर रह जाते हैं। महर्षि दयानन्द ने इसीलिए व्यक्तिगत हितकारी नियमों में स्वाधीनता और सामाजिक सर्वहितकारी नियमों में पराधीनता की बात आर्य समाज के दसवें नियम में लिखी है।

वैसे भी मनुष्य एकदेशीय होने के कारण अल्पज्ञ तथा अल्पशक्ति वाला होता है और उसे अपने अधिकांश कार्यों की पूर्ति के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। जैसे जिस अन्न से हम भोजन करते हैं भोजन के रूप में हम तक पहुंचने से पूर्व किसान, खेत में काम करने वाला मजदूर, आढ़ती, उसे परिष्कृत करने वाले और फिर उसे रसोई में पकाने के पुरुषार्थ के उपरांत ही हम यह भोजन ग्रहण कर पाते हैं। लेकिन इन सभी का पुरुषार्थ भी अपने स्वयं के लाभ के कारण ही होता है। इसका एक और उदाहरण स्वयं हमारा शरीर है। यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे मनुष्य का शरीर भी एक ब्रह्मांड की भांति ही उसका एक सूक्ष्म रूप है। मानव शरीर के सभी अंग भी हम मनुष्यों की भांति एक-दूसरे पर अपने कार्यों की सिद्धि के लिए निर्भर रहते हैं। जैसे लिखते समय यदि हाथों के साथ मन मस्तिष्क और आंखों का परस्पर सामंजस्य न हो तो हाथ कभी भी लिखने में सक्षम नहीं हो पाएंगे। परस्पर सहयोग और सामंजस्य की यह भावना हम सभी के एक ही आधार पर टिके होने से सिद्ध होती है। जिस प्रकार फूलों की माला में छिपा हुआ धागा बिखरे हुए फूलों को एक सूत्र में बांधकर माला के रूप में परिवर्तित कर देता है। ठीक उसी प्रकार वह सर्वव्यापी परमपिता परमेश्वर सृष्टि के कण-कण में विद्यमान होकर हम सभी का आधार, ओढ़ना व बिछौना बनकर हमें एक सूत्र में बांधते हैं साथ ही साथ वह परमपिता परमेश्वर समान रूप से अपने अति सूक्ष्म रूप में हम सभी जीवात्माओं के अंदर ईश्वर सर्वभूतानां हृदयेशे तिष्ठति अर्थात् सर्वअन्तर्यामी होकर एक सूत्र में पिरोने का काम भी करते हैं। यह हमारी परस्परतन्त्रता का आधार बनता है।

यज्ञ की परिभाषा में भी देवपूजा, संगतिकरण, दान तीन आवश्यक अवयव आते हैं। यहां यज्ञ के आवश्यक अवयव के रूप में संगतिकरण हम मनुष्यों के एक सूत्र में बंधे होकर परोपकार की दृष्टि से सामाजिक सर्वहितकारी नियमों में परतन्त्र होकर व्यक्तिगत हितकारी स्वतन्त्रता के बावजूद हमें समाज के रूप में जोड़े रखने के लिए परस्परतन्त्रता का सिद्धांत देते हैं। इसे यदि हम आधुनिक संविधान में देखें तो मेरे किसी भी अधिकार की सीमा किसी अन्य के अधिकार का अतिक्रमण करने की अनुमति नहीं देती है। जहां किसी अन्य नागरिक के अधिकार की सीमा प्रारंभ होती है वहीं से मेरे उसके प्रति कर्तव्य प्रारंभ हो जाते हैं। इसे ही परस्परतन्त्रता कहते हैं। यह परस्परतन्त्रता अपने स्वार्थ के परित्याग और परोपकार की भावना के स्वीकार करने से ही सिद्ध होती है। इसीलिए क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने ''संसार का उपकार करने को ही आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य'' नियमों में लिखा।

हम मनुष्य एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते और ना ही जीवन यापन कर सकते हैं। किसी भी प्रकार का कोई रिश्ता ना होते हुए भी हम मनुष्यों को परस्परतन्त्रता के सिद्धांत के अन्तर्गत सामाजिक समरसता के लिए मित्रभाव से देखना व वर्तना होता है। वेद भगवान ने आदेश दिया ''मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे'' अर्थात् हम एक दूसरे को मित्रभाव से देखें और वर्तें। जैसे अकेला खड़ा बड़े से बड़ा वटवृक्ष आंधी में अपने इस अकेलेपन के बोझ से गिर पड़ता है लेकिन आपस में जुड़ी हुई सरोवर में पैदा हुए कच्चे कमल वृद्धि को प्राप्त होते हैं। एक दूसरे के सहयोग व आश्रय से रहने वाले मित्र, बंधु, बांधव, संबंधीजन विपरीत परिस्थितियों में भी एक दूसरे का सहयोग करते उन स्थितियों को अनुकूल कर लेते हैं। परस्परतंत्रता व पारस्परिक मित्रता को विकसित करने के लिए हमें एक दूसरे पर विश्वास, एक दूसरे की भावनाओं का आदर व सम्मान करना चाहिए। अपनी गलती को बिना संकोच स्वीकार कर ठीक करते हुए क्षमा याचना करनी चाहिए। व्यर्थ की शिकायतों, निंदा, उलाहने व ताने मारने से बचना चाहिए। एक दूसरे को परस्पर उत्साहित व प्रेरित करना चाहिए तथा संकट के समय सहृदयता से सहायता करनी चाहिए। पारस्परिक मित्रता में स्वार्थ व अहंकार का कोई स्थान नहीं होता। पारस्परिक सहयोग सहअस्तित्व और एक दूसरे के हित को ध्यान रखने की भावना ही परस्परतन्त्रता में सर्वोपरि होती है। कभी सैद्धांतिक आलोचना आवश्यक हो जाए तो वाणी की अपेक्षा हमारा जीवन स्वयं बोले अर्थात् जिन सिद्धांतों को हम स्थापित करना चाहते हैं उन सिद्धांतों का पहले अपने जीवन में स्वयं पालन करें। यह परस्परतन्त्रता व पारस्परिक मित्रता सामाजिक समरसता एकजुटता व उत्थान के लिए अत्यंत आवश्यक है।

- 602 जी.एच. 53, सैक्टर-20 पंचकूला, मो.09467608686, फोन-01724001895

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2018 के चित्रों को देखने और डाऊनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से https://www.facebook.com/AjayTankarawala/ पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

वर्णाश्रम की संक्षिप्त व्याख्या

❒ खुशहाल चन्द्र आर्य

वैदिक धर्म में मनुष्य जीवन के चार स्तम्भ कहलाए जाते हैं, जिनका सही रूप में प्रयोग किया जावे तो समाज, राष्ट्र व व्यक्ति विशेष की प्रगति व उत्थान होना निश्चित है। किसी समाज व राष्ट्र को सुचारू रूप से चलाने के लिए ये आधार मिला हैं। वे है। (1) वर्णाश्रम (2) पाँच महायज्ञ (3) सोलह संस्कार (4) अष्टांग योग। यदि कोई व्यक्ति समाज, राष्ट्र व पूरा विश्व इन चार कार्यों को सुव्यवस्थित ढंग से अपने जीवन में अपना लेवें तो उसकी उन्नति व समृद्धि होना आवश्यक है। यदि कोई मनुष्य जीवन में अपने वर्ण तथा अपने आश्रम का कर्त्तव्य भाव व निष्ठा से पालन करे, साथ ही पंच महायज्ञों व सोलह संस्कारों का विधिवत् प्रयोग करे तथा अष्टांग योग के आठ अंग यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारण करते हुए समाधि अवस्था में ईश्वर के परम् आनन्द की अनुभूति करेगा और मृत्यु के बाद ईश्वर के सान्निध्य में रहकर मोक्ष के परम् आनन्द में विचरण करेगा जो जीव का मनुष्य योनि में आकर मोक्ष पाने का परम कर्त्तव्य है इसीलिए ईश्वर जीव को मनुष्य योनि में भेजता है जो जीव की अन्तिम योनि है। जिस राष्ट्र के निवासी इन चारों स्तम्भों को अपने जीवन में लागु कर लेवें वह राष्ट्र शीघ्र ही उन्नति व समृद्धि को प्राप्त करते हुए ''विश्व गुरु'' के ऊँच स्थान को सुशोभित कर सकेगा।

इस लेख में हम केवल वर्णाश्रम का ही संक्षिप्त व्याख्या करेगें जो इसी भांति है:-

वर्णाश्रम:- वर्णाश्रम में दो शब्दों का समावेश है। पहला है वर्ण दूसरा है आश्रम। वर्ण समाज व राष्ट्र से सम्बन्ध रखता है और आश्रम व्यक्ति के जीवन से। वर्ण का अर्थ होता है किसी वस्तु या किसी व्यवस्था का वर्ण करना यानि उसको ग्रहण करके अपने समाज व राष्ट्र को सुचारू से चलाना। ईश्वर ने भी यजुर्वेद में वर्ण व्यवस्था का एक मन्त्र द्वारा संकेत किया है जिसके अनुसार ही हमारे ऋषि-मुनियों ने समाज में वर्ण व्यवस्था ही स्थापना दी है। मन्त्र इसी भांति है:-

ब्राह्मणोंऽस्य मुखमासीद बाहु राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या शूद्रोऽ अजायत॥

यजु. 32.11

इस मन्त्र में वर्णचार बताए गए हैं, जिससे समाज व राष्ट्र सुचारू से चल सके। वे है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इन चारों वर्णों के अलग-अलग कर्तव्य व कर्म हैं। ब्राह्मणों का कर्तव्य है वेदों व ऋषि-मुनियों के लिखे ग्रन्थों को स्वयं पढ़े तथा दूसरे वर्णो को पढ़ावे जिससे समाज से अज्ञान दूर हो सके। इस मन्त्र में ब्राह्मण की मुख से उपमा की है। समाज का वीर, साहसी, बलवान वर्ग को क्षत्रिय वर्ण बताया गया है। इसकी उपमा हाथों से की गई है। इसका कर्तव्य है समाज से अन्याय को दूर करना। तीसरा वर्ण है वैश्य जिसका काम है व्यापार करना, खेती करना व पशुपालन करना। हम कामों से वह समाज से अभाव दूर करता है। चौथा वर्ण है शूद्र जो व्यक्ति पढ़ाने से भी नहीं पढ़े, ऊपर के तीनों काम न कर सके उसका कर्त्तव्य है ऊपर के तीनों वर्णो की सेवा करना जिससे तीनों वर्ण अपना-अपना कर्त्तव्य भली-भांति कर सकें। यह वर्ण व्यवस्था आश्रम में ऋषि-मुनियों ने मनुष्य की योग्यता के अनुसार कर्म के आधार पर बनाई थी। इनमें कोई छोटा बड़ा नहीं थे। सब एक समान थे। चारों वर्णों को धार्मिक व सामाजिक सुविधाएं एक समान मिलती थी। प्राचीन काल में प्रत्येक बच्चे को गुरुकुल में पढ़ने के लिए जाना पड़ता था। विद्यार्थी की गुरुकुलीय विद्या समाप्त होने के बाद जब बच्चा अपने माँ-बाप के साथ घर जाने को तैयार होता था तब गुरुकुल का आचार्या जिसने बच्चों को कई वर्षो तक पढ़ाया था, वह उसकी योग्यता और व्यवहार को अच्छी प्रकार जान लिया था। वह उस बच्चे का वर्ण निर्धारित करता था। बच्चा अपने माँ-बाप व परिवार के साथ रहते हुए ही अपने वर्ण का पालन करता था और इस प्रकार समाज व राष्ट्र की व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रहती थी। महाभारत तक यही वर्ण व्यवस्था कर्म के अनुसार चलती रही। महाभारत के महायुद्ध में अधिकतर विद्वान,पुरोहित, आचार्या, योद्धा के समाप्त होने से, कम पढ़े लिखें, अविद्वान, स्वार्थी ब्राह्मणों के हाथों में समान की पूरी बाग-डोर आ गई। इन्होंने समाज में हमेशा के लिए अपना प्रभाव बनाए रखने के लिए वर्ण को जाति बतलाकर कर्म व योग्यता से नहीं जन्म से जाति मानना आरम्भ कर दिया तभी से हिन्दू जाति का पतन आरम्भ हो गया। इसीलिए आज हिन्दू जाति की यह दुर्दशा हो गई और होते जा रही है। वर्ण व्यवस्था सुधारने से ही हिन्दू जाति की प्रगति होगी।

आश्रम व्यवस्था:- आश्रम व्यवस्था, यह मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन को सुदृढ़ व सुखमय बनाने वाली है। इस व्यवस्था के अनुसार मनुष्य को आयु एक सौ वर्ष निर्धारित की गई है और उसको चार भागों में बांटा है। पहला ब्रह्मचारिय आश्रम। यह जन्म से लेकर पच्चीस वर्ष तक होता है। इसमें जब बच्चा पांच या आठ साल का होने के बद वह गुरुकुल जाकर पच्चीस वर्ष की आयु तक ब्रह्मचारी रहते हुए विद्या अध्ययन करता है इसमें ब्रह्मचारियों वेदों के साथ-साथ ऋषि-मुनि कृत सब ग्रन्थों को पढ़कर अपनी बुद्धि को और ब्रह्मचर्य का पालन करके अपने शरीर को सुदृढ़ व बलवान बनाता है। इसके बाद पच्चीस वर्ष से पच्चास वर्ष की आयु तक ''ग्रहस्थ आश्रम'' अपने परिवार के पालन का आश्रम होता है। इसमें वह अपने परिवार का पालन करते हुए विद्वानों व अतिथियों को अपने पर-पर बुला कर समाज व राष्ट्र की सेवा करता है। यह आश्रम सबसे श्रेष्ठ कहलाता है कारण बाकी तीनों आश्रम इसी के ऊपर आश्रित है। इसके बाद पच्चास वर्ष से पचेत्तर वर्ष तक वानप्रस्थ आश्रय होता है। इसमें व्यक्ति परिवार को छोड़कर समाज व राष्ट्र की सेवा निःस्वार्थ भाव से निःशुल्क करता है। इस आश्रम में अपनी धर्म पत्नी साथ भी रख सकता है और पत्नी को अपने बच्चों के साथ छोड़कर अकेला भी वानप्रस्थी बन सकता है। इसमें व्यक्ति को जितनी भी सामाजिक संस्थाएं है, जैसे गऊशाला, अनाथालय, गुरुकुल था आर्य समाज मन्दिर आदि, इनमें बिना कुछ लिए केवल भोजन पर सेवा करने का विधान है। इस आश्रम में बहुत कम व्यक्ति जा रहे हैं। यदि सभी गृहस्थी, वानप्रस्थी बनने लग जावें तो समाज की सह संस्थाएं सुचारू रूप से चलने लगे और समाज व राष्ट्र बहुत उन्नति व समृद्धि करने लगें।

चौथा आश्रम सन्यास आश्रम है। इसकी अवधि पचेत्तर वर्ष से एक सौ वर्ष तक की तथा सौ से जितना अधिक तक जीवे तक तक की है। इस आश्रम में मनुष्य किसी एक परिवार, समाज व राष्ट्र में

बन्द कर नहीं रहता, वह विश्व के सभी के लिए पिता के समान बन जाता है। उसके लिए सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है और सब लोग उसके पुत्र व पुत्रियों के समान हैं। संसार के सभी दु:ख-सुख उस सन्यासी के दु:ख-सु:ख बन जाते हैं पर वह सभी दु:ख-सु:खो से ऊपर उठ जाता है। उसका मुख्य कार्य बन जाता है कि वह परिवारों में जाकर सभी सदस्यों को वेदों की शिक्षा देकर उनके जीवन को सुखी बनावे। इसके बदले में वह उस परिवार में भोजनकर लेवे और इसी प्रकार उसका जीवन मृत्यु पर्यन्त चलता रहे।

वर्ण व्यवस्था में मैं लिखना भूल गया कि यह व्यवस्था एक कार्य विभाजन है। जैसे किसी व्यात को भोजन खिलाते समय कई व्यक्ति उनको भोजन खिलाते है। कोई हल्वा परोसता है तो कोई मूड़ी, कोई साग, कोई नमक और कोई पानी देता है। भोजन खिलाने के बाद सब मिलकर भोजन करते हैं। उनमें कोई छोटा बड़ा नहीं है। यही बात वर्ण व्यवस्था में है। इसे भी कार्य विभाजन हो समझें।

इस प्रकार चारो वर्णो श्रमों का संक्षिप्त परिचय दिया है। सुधी पाठक इससे लाभ उठावें तभी मेरा परिश्रम सफल होगा।

- C/o गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स, 180 कोलकता-700007,
मो. 9830135794, फोन-22183825

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

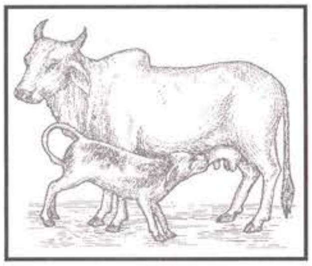

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

दायित्व निहित युवा पीढ़ी कर्त्तव्यों का पतन कर रही है.. कि नहीं

❒ रामचरण यादव, बैतुल

राष्ट्र के समुचित विकास में युवा पीढ़ी का बहुत बड़ा दायित्व निहित है किन्तु आज की नई युवा पीढ़ी अपने कर्त्तव्यों का भली भांति पालन कर रही है कि नहीं, इसकी समीक्षा करना बहुत जरूरी है। समकालीन संदर्भो में युवाओं का कर्त्तव्य और आदेश वर्तमान परिस्थिति के अनुकूल नजर नहीं आ रहा है। दिशाहीन भ्रमित युवा पीढ़ी कुछ हद तक सभ्यता की सीढ़ी को तोड़-फोड़ कर खण्डर का रूप प्रदान करने में लगी हुई है। वर्तमान समय में जहां हम 21वीं सदी में जाने के लिए अत्याधुनिक जीवन अपनाने की दौड़ में शामिल हो रहे है तो दूसरी ओर देश के करोड़ो युवक रोजगार और शिक्षा के लिए भटक रहे है जबकि पराधीनता के युग में इस देश की तरूणाई संघर्ष और बलिदान की भट्टी में तपकर ऐसे सुदृढ़ इस्पाती संकल्पों के साथ उभरी थी जिसने विदेशी दास्ता के लौह पाशों को काट डाला था। भारत की अजीब परम्परा रही है कि हमेशा से युवा पीढ़ी का योगदान विश्व के ढांचे को बदलने में सफल सिद्ध हुआ है। देश के युवाओं ने अपने प्राणों की आहुति देकर भी आजादी दिलाने के संकल्प को पूरा किया। वहीं कई युवा देश भक्तों ने अमन चैन का पैगाम देते हुए अपने उत्कृष्ट कृत्यों को नया अंजाम दिया। इतिहास के सभी ग्रन्थों में सबूत मौजूद है। जब-जब भी देश विपत्ति, अशांति, अटकलों के दौर से गुजरा तब-तब युवाओं ने मिलकर एकता भाईचारा का नारा देकर युवा शक्ति को प्रोत्साहित किया परिणाम स्वरूप विपत्ति के भंवरजाल से निकलकर आज राष्ट्र उस मुकाम पर पहुंचा है जहां दुसरे अन्य देश अभी भी उस शक्ति का स्मरण कर विस्मृत रह जाते है। समय प्रति समय युवा चेतना का क्रान्तिकारी प्रदर्शन विश्व को चकित करता रहा है और करता रहेगा परन्तु फिर भी आज कि स्थिति कुछ विपरीत सी नजर आती है। युवा वर्ग फैशन की इस दौड़ में शामिल होकर अपनी संस्कृति, सभ्यता, की परिधि से बाहर भागना चाहता है जो सर्वथा अनुचित है। हमारी भारतीय संस्कृति सचमुच सर्वश्रेष्ठ है उसे भूलकर अन्य पाश्चात्य संस्कृति को अपनाना दोषपूर्ण ही नहीं बल्कि भयानक हो सकता है। आज युवा वर्ग कहां जा रहा है। उसके नेतृत्व के लिए हम क्या कर रहे है, देश उससे क्या उम्मीद करता है और वह किस प्रकार देश के नव निर्माण में कारगर भूमिका अदा करे इस विषय में सोचना भी बहुत जरूरी है युवा पीढ़ी से देश की आशाएं कुछ ज्यादा ही है उन तमाम देशवासियों की इच्छा को पूर्ण करने वाले देश के कर्णधार भविष्य के होनहार युवाओं का आव्हान करते हुए सभी राजनेता, धर्म नेता यही चाहते है कि युवा वर्ग हमारे साथ रहे। युवा अपनी शक्ति का गलत इस्तेमाल करने लगे हैं, कुछ असामाजिक तत्व व स्वार्थी नेताओं के ईशारों पर बल का प्रदर्शन करना जनहित में दण्डनीय अशोभनीय है। हमें यह अच्छी तरह सोचना होगा कि युवा शक्ति रचनात्मक कार्यो में सहयोग प्रदान कर देश की प्रगति को गति प्रदान करने की बजाय विकास में बाधा तो नहीं बन रही। स्वतन्त्र और सक्षम युवा वर्ग सम्पन्नता की झलक से बुरी तरह प्रभावित है दुनिया के विभिन्न रंग ढंग ने युवाओं को अपने जाल में फंसाने की भरसक कोशिश की और काफी सफलता भी हासिल की है। जबकि युवा शक्ति में ही किसी भी राष्ट्र की गति उर्जा और तेजस्विता निहित होती है। उसमें यदि उत्कर्ष की उदम्य भावना होती है तो संघर्ष और उत्सर्ग की अपराजेय क्षमता भी, वह अछूते शिखरों का स्पर्श करने तथा जिन नवीन क्षितिजों को उद्घाटित करने के लिए लालायित होता है वह जीवन के अन्य किसी आयु खण्ड के लिए कदापि संभव नहीं है। इस युवा पीढ़ी की तुलना ऐसी पहाड़ी नदी के प्रचण्ड वेग से की जा सकती है। जो अपनी उदगम शक्ति से समस्त बाधाओं और प्रस्तर खण्डों को चूर-चूर कर अपना मार्ग बनाती है। यदि इस प्रचण्ड प्रवाह को रचनात्मक दिशा मिले तो यह रेगिस्तान में फूल खिला सकती है। अन्यथा उच्श्रंखल बाढ़ के रूप में अपने तटों को तोड़कर यह विनाश बिखेर देती है। आज युवाओं की यही हालत है मंहगी शिक्षा और बेरोजगारी के बोझ ने उसे असंतुलित कर दिया है। उस पर दिशाहीन पथ भ्रष्ट होने का आरोप लगाना उचित न होगा। युवाओं को यहां तक लाने में हम भी तो दोषी है।

युवा पीढ़ी एक तरफ बेरोजगारी, भुखमरी, गरीबी और लाचारी से पीढ़ित है वही उसकी तीव्र लालसा शाने शौकत से जीने की कामना निरन्तर उत्तेजित कर रही है। मान मर्यादा को भूल अपनी ही मस्ती में मस्त युवा वर्ग भले बुरे परिणाम की चिन्ता किये बिना कुछ भी करने को तैयार है। सत्ता का मोह भी उन्हें सताने लगा है। तोड़-फोड़ गुण्डागर्दी को अपना पेशा समझने वाले अपने आप को बड़ा बताने में जुटे हुए है एक दूसरे पर हावी होने की प्रथा पनप रही है। हिंसा, हत्या, बलात्कार आदि जघन्य अपराधिक कार्यों में संलग्न होने पर भी सीना फलायें सच्चा देशभक्त होने की डींग हांकते है, वे यह भी नहीं समझ पाते कि कुछ स्वार्थी लोग शक्ति का गलत प्रयोग करके अपना उल्लू सीधा कर रहे है और बेचारे ये लोग मुफ्त में फंस रहे है। देश के युवाओं की वर्तमान हालत एक ऐसी भयावह स्थिति की ओर संकेत करती है कि हमारे प्रयास केवल सतही है जो केवल बाहरी तड़क भड़क के स्वांग में सिमट कर रहे जाते है। युवाओं को प्रोत्साहित कर अच्छे कार्यों में जुटाना हमारी नैतिक जिम्मेवारी है। यह राष्ट्रीय आस्तित्व का मुद्दा है इसे किसी भी तरह सुदृढ़ और स्थायी बनाने का भरसक प्रयत्न करना है। युवा वर्ग की उपेक्षा कर राष्ट्र तरक्की नहीं कर सकता लेकिन इसमें युवा वर्ग का भी यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वह भी भेदभाव को भूलकर परस्पर प्रेम, भाईचारे और परोपकार की भावना से ओत प्रोत जीवन जीना सीखें जिसमें त्याग और सेवा की झलक स्पष्ट दिखाई दें। माना कि स्थिति विपरीत है मगर अन्त में तुम्हारी ही जीत है। वर्तमान समय वातावरण दृष्टि है प्रत्येक व्यक्ति बुराईयों से लिप्त है। चोरी, डकैती, भ्रष्टाचार, हत्या की खबरे समाचार पत्रों में भरी पड़ी रहती है। फिल्मों ने युवा पीढ़ी को कुछ सिखाया जरूर किन्तु बहुत कुछ छीना भी है। आदर्श, चरित्र की बात दूरी रही शिक्षा की तरफ भी इनका पूरा-पूरा ध्यान नहीं। इसके लिए हम सभी को सामुहिक प्रयास करना होगा। शिक्षक विद्यालयों में, पालक घरों में ऐसा शुद्ध मर्यादा युक्त वातावरण बनाये जिसके प्रभाव में युवा पीढ़ी स्वत: प्रभावित होकर परिवर्तित हो जाये। भले ही इसके लिए कठोर परिश्रम करना पड़े हम अवश्य करेंगे लेकिन हमारी युवा शक्ति को बचाकर रखेगें जो वक्त पर देश के काम आ सकें। युवा पीढ़ी को सशक्त मार्गदर्शन की आवश्यकता है स्वामी विवेकानन्द का जीवन युवाओं के लिए प्रेरणा पुंज, प्रकाश स्तम्भ है। स्वर्गीय राजीव गांधी का संदेश युवा को प्रेरित करते रहेगा किन्तु उत्कृष्ट जीवन शैली का

प्रतिबिम्ब हर युवाओं पर अंकित हो सके इसके लिए प्रति ध्वनि की पूर्नरावती जरूरी है। युवाओं के पास शक्ति है वे उसका प्रयोग कही न कही अवश्य करना चाहेंगे। उनकी शक्ति का दुरूपयोग हो इसके लिए विभिन्न योजनाओं का निर्माण करना होगा उन्हें भरपूर सहयोग देकर सही दिशा पर लाने का आन्दोलन प्रारंभ करना ही होगा। यदि हमने दीवार पर लिखी इबारत को पढ़ने से इंकार किया और आत्म प्रवंचना की रेत में सिर धसाए रहे तो समय हमारी प्रतिक्षा नहीं करेगा। एक प्रलयकारी बाढ़ की भांति उद्दाम और उच्चश्रृंखला युवा शक्ति वह सब बिखरे देगी जिसके मोहपाश में हम जकड़े हुए है। तब विध्वंस में निर्माण के बीज तलाशे जाएंगे ऐसी स्थिति किसी के लिए श्रेयस्कर नहीं है न युवा पीढ़ी के लिए और न राष्ट्र के भविष्य के लिए। वर्तमान समय इन युवाओं के ज्वलंत समस्याओं पर विचार करने के लिए हम सभी को झकझोर रहा है।

प्रधान सम्पादक-नाजनीन, सदर बाजार, म.प्र. 460001

खाने के भी नियम होते हैं

❐ आयुर्वेद शिरोमणि डॉ. मनोहरदास अग्रावत

परिवार के प्रत्येक सदस्य का स्वास्थ्य उस घर की महिला के ऊपर काफी निर्भर करता है, क्योंकि उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए रसोई परिवार का औषधालय है। भोजन बनाने एवं परोसने जाती महिला की मनो-भावनाओं का भोजन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है अत: प्रत्येक महिला का परम-कर्त्तव्य है कि भोजन बनाते समय उच्च एवं पवित्र विचार मन में रखें और निश्चित समय पर ही भोजन करें। परिवार मन में स्नेह के साथ भोजन करायें। शुद्ध एवं सात्विक भोजन स्वास्थ्य को परिपुष्ट रखता है, क्योंकि भोजन ही औषधि है।

ऋतु अनुसार एवं जीवित भोजन यानि की भोजन को अधिक तला-भुना न जाय। खटाई, लाल मिर्च एवं तामसिक भोजन का प्रयोग नहीं करना चाहिए। प्रात: काल अंकुरित अनाज एवं दालों का प्रयोग करना चाहिए। भोजन सम्बन्धी इन नियमों का महिला को कठोरता से पालन करना चाहिए।

हितकारी भोजन पदार्थों का संयोग:-❑ आम एवं खजूर के साथ दूध का सेवन। ❑ खरबूजे के साथ शक्कर (बूरा) खाण्ड के शर्बत का सेवन। ❑ केला खाने के बाद छोटी इलायची का सेवन। ❑ चावल के साथ नारियल की गिरी (गोला) का सेवन। ❑ मूली के साथ मूली के पत्ते एवं डण्ठल का सेवन। ❑ गाजर के साथ मैथी-साग का सेवन। ❑ इमली के साथ गुड़ का सेवन। ❑ मक्का के साथ मट्ठा का सेवन। ❑ अमरूद खाने के बाद सौंफ का सेवन। ❑ भोजन खाने के बाद अनार का सेवन। ❑ दही के साथ मूंग का यूष, घी एवं शक्कर, शहद या आँवला चूर्ण मिला कर सेवन करना।

हानिकारण भोज्य पदार्थों का संयोग:-

1. दूध के साथ वर्जित पदार्थ:- नमक, गुड़ एवं तिल के बने पदार्थ, तेल में बने पदार्थ, जौं का सत्तू, शहद (मधु), केला, बेल का फल, कैथ का फल, बेर, नारियल, अखरोट, बड़हल, मूली, हरी सब्जियाँ एवम् साग, सहजने की फली, कटहल, करौंदा, कुल्थी, उड़, मोठ, सेम, शराब, इमली, नींबू एवं अम्ल रस वाले फल आदि।

2. प्रात:काल वर्जित फल:- केला, जामनु, बेर, गुलर, ताड़ का फल, इमली, सौंठ (अदरक), अंकोला, चिरौंजी, नारियल का सार व तिल के बने पदार्थ।

3. घी एवं शहद को बराबर मात्रा में मिलाकर सवन नहीं करना चाहिए।

4. दही के साथ वर्जित पदार्थ:- दूध, खीर, पनीर, केला, मूली, खरबूजा, बेल का फल एवं गर्म भोजन का सेवन नहीं करना चाहिए।

5. भोजन के अंत (बाद) में वर्जित पदार्थ:- केला, ककड़ी, कमलनाल, भिस, शालूक, कन्द वाली सब्जियाँ, (आलू, अरबी, कचालू) और गन्ने से बने पदार्थ भोजन से पहले सेवन करने चाहिए।

6. सूर्यास्त के बाद (रात) में वर्जित पदार्थ:- मूली, खीरा, दही, मट्ठा, जौं का सत्तू एवं तिल के बने पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए।

भोजन सेवन सम्बन्धी नियम- ❑ भोजन एकान्त में, हाथ-पैर धोकर, प्रसन्नचित व शांति पूर्वक करना चाहिए। ❑ एक भोजन से दूसरे भोजन के बीच कम से कम तीन घण्टे का अंतर होना चाहिए। ❑ भोजन को खूब चबाकर यानि एक ग्रास को 32 बार चबा कर खाना चाहिए। ❑ पानी भोजन से एक घण्टा पहले या एक घण्टा बाद पीना चाहिए। ❑ भोजन के तुरन्त बाद पेशाब (मूत्र) करना चाहिए। ❑ दोपहर भोजन करने के बाद लेटना चाहिए। पीठ के बल लेटकर 8 श्वांस, दांयी करवट लेटकर 16 श्वांस तथा बांयी करवट लेटकर 32 श्वासं लेने चाहिए। ❑ शाम को भोजन करने के बाद टहलना चाहिए। ❑ सूर्यास्त के बाद भोजन नहीं करना चाहिए। ❑ किसी भी भोज्य पदार्थ का सेवन करने के बाद कुल्ला अवश्य ही करना चाहिए। ❑ शारीरिक व मानसिक थकावट व क्रोध, भय, चिन्ता, शोक एवं परेशानी होने पर भोजन नहीं करना चाहिए।

- मनोहर आश्रम, उम्मैदपुरा

आप ऋषि जन्मभूमि हेतू दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **"श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा"** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0466500 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी हैं मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

THE SUPER EXPLODER OF MYTHS; SWAMI DAYANAND SARASWATI

❐ Brigadier Chitranjan Sawant, VSM

Truth has been the watchword of the Aryas. Aryas are the people who lead a life as enjoined on them by Dharma. Dharma is the path of righteousness. The original source of righteousness is the holy VEDAS. Right at the beginning of the creation, God revealed the Vedas – the knowledge to the Rishis for the guidance of Man. Thus the celestial knowledge, the holy VEDAS, is for the guidance of the entire mankind. No sect, region or religion or race can monopolize it. All men and women are entitled to receive and recite, preach and practice the Ved Mantra or the contents of the Vedic hymns.

A denial of this divine right by man to man is mythical and unethical . Many a time an ignorant or ill advised coterie makes an endeavour to deprive a majority of men and women of the fruits of divine knowledge, the VEDAS, and thus gives birth to myriad of myths. Thus myths are born in ignorance, nurtured in greed and nourished in senseless and meaningless rituals. The generators and perpetrators of myths are enemies of mankind. To let the vast humanity be benefited by imbibing the knowledge of the VEDAS, the coterie which prevents the free flow of the divine knowledge must be busted. Myths created to cow down the less privileged by the over-privileged and pampered segments of the social order must be exposed.

Such a super exploder of myths was an ascetic, a sanyasi, Swami Dayanand Saraswati. It was he who gave the clarion call "Back to the VEDAS." The decay that had set in was rectified to a large extent by Swami Dayanand Saraswati's relentless campaign in propagating the Vedic way of life. He launched a two pronged attack on the decadent human society, cleanse it of moral, mental and physical ills and pave the way for our souls to attain the state of bliss, viz MOKSHA. Let us take a look at his modus operandi.

Haridwar-Rishikesh road runs almost parallel to the Ganges. The scene is set on the banks of Ganga along that road at milestone six from the famous ghat. "Hari Ki Pauri.' The KUMBH fair of 1867 is in full swing. A tall, well built, fair and impressive sanyasi is standing below an ochre flag exhorting the flocks of believers to live by the tenets of the divine knowledge, the VEDAS. The Dev Nagri inscription on the flag cannot but attract attention. "Pakhand Khandini," i.e. an exploder of myths and deceptions. The essence of the Sanyasi's sermon on the Sand was:

(a) God is Omnipresent and is NIRAKAR i.e. imageless. He is not bound in a form. He is never born and, therefore, does not die.
(b) God is the fountainhead of all true knowledge.
(c) VEDAS are divine; prescribes the path of righteousness for man.
(d) Forsake falsehood, myths, and superstitions.
(e) Those who swindle the common man in the name of false precepts are not Dharma gurus but Bhrashta gurus and parasites on society.

The sanyasi giving discourses under the Myth-Exploder Banner, Pakhand Khandini Pataka, was none other but Swami Dayanand Saraswati. He distributed a small pamphlet "Exploding Myths," free of cost. Its theme exposed the falsehood of Vishnu Bhagwat, a Puran full of falsehood, by highlighting its negative approach, its propagation of false gods thereby betraying ignorance of the Vedic way of life. People who made money by throwing the Vedic Dharma overboard and narrated cock and bull stories by inventing false gods were nothing but thugs and criminals preying on people.

Swami Dayanand Saraswati took it upon himself to cleanse the society of false gods and criminals masquerading as god men. These men and women were like cancer and jeopardized health of the society. False Gods, superstitions and false gurus not only sapped strength of society but prevented growth of scientific approach and scientific mind. He enjoined on the Arya Samaj founded by him in 1875 in Mumbai to wage war against the negative, superstitious god men and promote the theistic scientific approach of the Vedic Dharma. He and his fellow Aryas enacted 10 principles of the Arya Samaj in 1877 in Lahore to guide the common man to attain bliss, the MOKSHA.

Swami Dayanand Saraswati traveled far and wide in India to explode many a myth – these were indeed making man moribund. From Multan in the west to Calcutta in the east, from the Himalayan heights in the north to the plains of Pune in the Deccan were his preaching playgrounds. The myriad myths that he exploded and spurious institutions that he attacked, smarted under his verbal and written onslaught. The learned Swami held discussions with preachers of faiths like Christianity, Islam and converted captains and commoners, preachers and priests to his own point of view, the Vedic Thought. Among the 55-odd books and pamphlets that he wrote, the most widely read is the "Satyarth Prakash," or the "Light of Truth." Let us go through a few of its noble and enlightening gems of true knowledge contained in 14 enlightening chapters.

The Vedic trinity is: God; soul; and matter. In Hindi it is: Parmatma; Jeevastma; and Prakriti. The most common myth is: God comes to this world in the form of a man. The ignorant ones call it "an avatar." In the Vedic trinity, God is God, there is only one God, and God has no image or idol. And, therefore, idol worship is an exercise in futility. Likewise, a Jeevatma can never become God or Parmatma. Men of weak minds elevate stronger men to Godhead. Consequently, there are god men galore even in the 21st century, notwithstanding all avenues of enlightment that are available to the modern man. Today god men, sadhus and fakirs are just fakes and frauds – out to cheat the gullible in the guise of teaching tenets of

religion. Vedic mantras quoted in the Satyarth Prakash show us the path to enlightenment; teach us to be mentally robust, physically fit and militarily strong to vanquish all foes. Mind is the man. Make your mind strong through meditation, pranayam and righteousness. You will, thus, make the fake fakirs vanish in thin air. The myth of god- men making gold watches for the rich and ash for the poor in a magician style will stand exploded.

In a society where the guru cheats the shishya (disciple) and the shishya cheats the guru, both are bound to sink together. Let us not cheat each other and malign the pious bonds. Sailing in a made of stone , are they not? No way but to sink! They are indeed sunken souls and cannot be redeemed because of their bad Karmas, action based on deceit.

Let us take a close look at the falsehood perpetrated on the so called scientific societies. Can a Virgin be impregnated without mating with a man? Here is a case of normal pregnancy of a married woman whose marriage has not been consummated. She never had a chance to share the marital bed with her legal husband. There is a natural birth and the boy born thus is hailed as a son of God. Ask yourself, the enlightened ones! Isn't it out and out a case of promiscuity being sanctified in the name of Father,Son and the Holy Ghost. Isn't it the biggest myth in man's mythology? Swami Dayanand Saraswati exploded this myth neat and proper in the 13th chapter of the "Light of Truth."

Preying on feeble minded men and women, many Muslims are masquerading as Bengali Tantrik babas in rich areas like Greater Kailash of New Delhi. These frauds are neither Bengalis, nor babas nor tantriks. Just Thugs. Here is an area where myths must be exploded. A subsidized sale of "The Light of Truth" will be in order. Further the Muslims all over the world should reconsider the process of slaughter of animals after reciting a verse of Koran. "Let us begin in the name of Allah, who is kind and merciful." And the animal is slaughtered. It is a contradiction of terms in precept and practice and needs urgent reconsideration.

Let us, therefore, take a pledge that we will explode myths, follow the path of truth as enjoined on us by the VEDAS, as interpreted by Maharishi Swami Dayanand Saraswati and enshrined in the Ten Principles of the Arya Samaj. Let us all, men and women strive for salvation – the MOKSHA.

Telephone : 0091-120- 2454622, Mobile:0091-9811173590
Email;sawantchitranjan@yahoo.com or
aumchitranjansawant@gmail.com

A Little act of Kindness

It was a relaxing day and we were looking at the pictures taken during our Eastern Europe Trip. On seeing a picture a touching memory clicked us. It was in the month of May, very cold and windy, We were in the outskirts of Munich (Germany) and staying in a hotel. There was a shop in the shape of strawberry. A middle aged beautiful woman was selling freshly picked big sized juicy strawberries.

During our stay we bought strawberries from her on Ist and 2nd day. On 3rd day in the morning we were about to leave for Prague. My husband Dinesh always buys lots of fruits. So that day also he went to buy strawberries for the journey. That lady was trying hard to open the door of the shop but the door got stuck. She was about to call someone for getting the door open and it would have cost her a lot of money. Dinesh offered her help and succeeded in opening it. Her face lit up. She thanked him and gave a big bag of juicy strawberries and didn`t take money despite repetitive request. She said "you have saved my money. Please accept it as token of gratitude." He took and shared with our whole group.

That`s why I always say it's and amazing world with kind people all around the world and a little act of gratitude prevails.

- Smt. Nidhi Dinesh Lodha

One small thought in the morning
Can Change your whole day.

Teaching-An Ideal Tool for Reforming Society

Teaching is the only profession that teaches other professions. A teacher has the capability of shaping the future of children. A good teacher not only makes the students to feed but knows well, what exactly to feed them and how to make the subjects more palatable and easily digestible. A good teacher is capable of not only bringing the best out of a students but also nourishing his talent. Like clay models, students too can be shaped or mis-shaped-according to the type of the teachers they get. Many competent persons whose hidden talents could not find any recognition could have made a mark if they were lucky enough to have a right teacher at the right time. It is rightly said that "Parents give birth, teachers give worth" and " I am indebted to my parents for my living and to my teachers formy living well". The problem with the teaching profession is that many people don`t come to this profession by choice but by compulsion. The idel profession of teaching was once the passion of our ancient rishis and munis. Now with the passage of time commercializaton has spread its tentacles in it too. It has scrapped moral values from it. Any way the happiness and satisfaction one gets from this profession is unparallel. A good teacher can contribute more in reforming the society than thousand of preachers.

- Poonam Gakkhar,
DAV Centenary Public School, Haridwar, Uttarakhand

प्रभात-वन्दन

❐ सत्यकाम विद्यालंकार

ऋषि:-**वसिष्ठ: (अथर्वा)**। देवता-**अग्न्यादि**। छन्द:-**निचृज्जगती**। स्वर:-**निषाद:**॥

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे, प्रातर्मित्रावरूणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं, प्रात: सोममुत रूद्रं हुवेम॥

- यजु:. 34।34

हे प्रभो! हम प्रात:काल तुम्हारे तेजोमय अग्निरूप का ऐश्वर्यमय इन्द्ररूप का स्नेह तथा न्यायमय मित्र और वरूणरूप का, और आदान-विसर्गात्मक अश्विनीरूपों का आह्वान करते हैं। हे आराध्यदेव! हम आपके दिव्य महिमामय भगरूप का पुष्टि देनेवाले पूषारूप का अखिल ज्ञानमय ब्रह्मणस्पतिरूप का तथा आपके सौम्य एवं रौद्रगुण-सम्पन्न सोम और रूद्ररूप का प्रतिदिन प्रात: काल आह्वान करें।

जागें सूरज से पहले

अच्छे स्वास्थ्य के लिए रात को जल्दी सोने और सुबह सूर्योदय से पहले उठने की बात कही जाती है। जल्दी उठने के अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। मगर आजकल की व्यस्त जीवनशैली में मनुष्य शरीर व मन को प्रकृति से समरस रखने का अभ्यास भूल चुका है। ऋषि मुनि और विद्वानों ने ब्रह्म मुहूर्त में उठने के कई फायदे बताए हैं। उनके अनुसार, सुबह जल्दी उठने से सौन्दर्य, बल, विद्या, बुद्धि और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। सुबह-सुबह का वातावरण हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक होता है। सुबह वायु प्रदूषण भी नहीं होता और न ही ध्वनि प्रदूषण। यह हमारे शरीर और मन दोनों को फायदा पहुंचाने वाला है। इसके अलावा यह समय अध्ययन के लिए भी सर्वोत्तम बताया गया है, क्योंकि रात को आराम करने के बाद सुबह जब हम उठते हैं तो शरीर तथा मस्तिष्क में भी स्फूर्ति व ताजगी बनी रहती है। अगर आप सुबह जल्दी नहीं उठ पाते हैं तो इन उपायों को आजमाएं:

❑ अपनी अलार्म घड़ी को बिस्तर के पास रखें, ताकि यह बजे तो आपको ठीक से सुनाई दे। अलार्म बंद न करे। ❑ नींद खुलने के बाद आलस में लेटे न रहे। जितनी जल्दी हो बिस्तर छोड़ दें। ❑ सुबह उठने के लिए जरूरी है रात में समय पर सोएं। कारण, समय पर नहीं सोएंगे तो सुबह जल्दी उठेंगे कैसे। ❑ सुबह उठकर भी अगर टीवी लैपटॉप के आगे बैठ गए, तो व्यर्थ है सुबह। पूरे दिन काम ही करना है, इसलिए सुबह के समय योग या टहलने पर ध्यान केन्द्रित करें।

स्वस्थ एवं सुखी रहने के सूत्र

❐ केवलसिंह आर्य

- ❑ अनावश्यक आराम छोड़ दो, शरीर को आवश्यकता से अधिक आराम मत दो। 6-7 घण्टे आराम काफी है। इससे अधिक आराम करना डायबिटीज (शुगर) को जान-बूझकर बुलावा देना है।
- ❑ भविष्य में आने वाले बड़े दु:खों से बचना है तो वर्तमान के छोटे-छोटे सुखों को छोड़ दो। अर्थात् चार-पांच बजे बिस्तर छोड़कर दिनचर्या आरम्भ कर दो। आलस्यवश बिस्तर में पड़े रहना भविष्य में बीमारी मोल लेने की तैयारी करना है। विद्वानों का कथन है कि चार बजे के पीछे सोना है इस जीवन को खोना, झट शैय्या को त्याग अमृत बरस रहा है।
- ❑ प्रात: उठते ही बिना कुल्ला किये डेढ़-दो गिलास गुनगुना पानी बैठकर घूंट-घूंटकर पी जाओ। इससे मुंह में जो लार है जो रात में बनी है वह अधिकतम पेट में जाएगी जो कि शरीर के लिए बहुत लाभकारी है।
- ❑ 'भोजनान्ते विषं वारि' भोजन करने के तुरन्त बाद पानी पीना जहर पीना है। भोजन करने के डेढ़ घंटा बाद पानी पीओ। प्रकृति का नियम है ज्यों ही आमाशय में भोजन जाना शुरु होता है, जठराग्नि प्रदीप्त हो जाती है, जो कि भोजन को पचाती है। पानी पीने से वह अग्नि बुझ जाती है। अब भोजन पकेगा नहीं, बल्कि सड़ेगा। भोजन पचने से रस, रक्त, मांस, अस्थि, मज्जा, वीर्य, ओज बनते हैं। भोजन सड़ने से गैस, अम्ल, पित्त, कफ बनते हैं।
- ❑ भोजन करते समय भोजन का स्वाद मत देखो, भोजन की गुणवत्ता देखो। जीभ छह इंच की है, शरीर छह फुट का है।
- ❑ बिना भूख भोजन मत करो। भूख लगने पर ही भोजन करो। भूख के लिए आयु के अनुसार शारीरिक श्रम अवश्य करो।
- ❑ यदि सुखी रहना है तो अच्छे काम इच्छा न होते हुए भी करो। बुरे काम इच्छा होते हुए भी मत करो।
- ❑ तन को शुभ कर्मो में लगाये रखो, मन को ईश्वर में लगाए रखो। आपका जीवन सफल हो जाएगा।
- ❑ योगाभ्यास (आसन, प्राणायाम) प्रतिदिन आधा घंटा कम से कम अवश्य करो। योग स्वस्थ व्यक्ति के लिए जीवन पद्धति है, रोगी के लिए उपचार पद्धति है।

- सेवानिवृत्त सहायक अभियन्ता, योग शिक्षक, थर्मल कॉलोनी, पानीपत

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 21 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)**

-प्रबन्धक

धन और विद्या में विद्यार्जन अधिक महत्वपूर्ण है

❒ मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य को अपने जीवन का निर्वाह करने के धन की आवश्यकता होती है। यदि किसी के पास धन नहीं है तो वह अपना भोजन, वस्त्र, निवास व घर तथा मान सम्मान को सुरक्षित रखते हुए इन सभी पदार्थो को प्राप्त नहीं कर सकता। इसके विपरीत यदि किसी के पास विद्या नहीं है तो फिर वह विद्वानों में तो सम्मान से वंचित रहता ही है अपितु उसका अपना निजी जीवन भी सुखमय नहीं होता। धन और विद्या दोनों का अपना अपना महत्व है। धन है परन्तु विद्या नहीं है तो मनुष्य उस धन का सदुपयोग नहीं कर सकता। उसे हर समय चोर, डाकुओं व ठगों का भय बना रहेगा। वह ज्ञान व विद्या न होने से अपने धन की भली प्रकार से रक्षा नहीं कर सकेगा। धन की रक्षा विद्या से होती है अर्थात् विद्या से युद्ध बुद्धि से मनुष्य अपने धन व अन्य पदार्थों की रक्षा कर सकता है। अतः ज्ञान व विद्या का महत्व निर्विवाद है। अब विद्या व धन के साधनों पर भी संक्षेप में विचार कर लेते हैं।

विद्या के लिए मनुष्य को अपने माता-पिता व परिवार के बड़ों से संस्कार व ज्ञान की बातें प्राप्त होती हैं। पाठशाला जाने की आयु हो जाने पर वह पाठशाला भेजा जाता है जहां आचार्य व गुरुजन उसे अक्षरों आदि सहित अंकों का ज्ञान कराते हैं। धीरे धीरे वह विद्या प्राप्त करने के साथ अंकों की गणनायें करना सीख जाता है। उसे अपनी शारीरिक रक्षा के उपाय व उसके लिये वायु सेवन, भ्रमण, व्यायाम तथा संतुलित शाकाहारी भोजन पर निर्भर रहने के विषय में भी बताया जाता है। इनके साथ ही मनुष्य को ईश्वर, सृष्टि व आत्मा सहित अपने कर्तव्यों का ज्ञान भी आचार्यगणों द्वारा कराया जाता है। ऐसा करके मनुष्य धीरे धीरे ज्ञानी बनना आरम्भ हो जाता है। प्राचीन परम्परा के अनुसार मनुष्य को पहले व्याकरण पढ़ाया जाता था। आजकल भी मनुष्य को हिन्दी व अंग्रेजी का व्याकरण स्कूलों व विद्यालयों में पढ़ाया जाता है। व्याकरण सीख जाने पर युवक को बोलना व दूसरों से कैसे व्यवहार करना है, इन बातों का ज्ञान हो जाता है। संस्कृत का व्याकरण पढ़ लेने पर मनुष्य संस्कृत के ग्रन्थों का अध्ययन कर उनमें निहित विद्याओं को जान सकता है। इस प्रकार से वह जितना जितना अपने अध्ययन को अपने आचार्य की सहायता से बढ़ाता जाता है उतना ही ज्ञान उसका बढ़ता जाता है। विद्या पूरी होने पर वह पूर्ण ज्ञानी, जितना मनुष्य के लिए सम्भव है, को प्राप्त हो जाता है और उसके बाद वह अपने ज्ञान, स्वभाव आदि के अनुरूप काम करके पर्याप्त धन कमा सकता है। इससे वह अपने व अपने परिवार का जीवन निर्वाह कर सकता है। इसके लिए मनुष्य को परिश्रमशील वा पुरुषार्थी होना आवश्यक है। मनुष्य यदि परिश्रमशील व शुद्ध ज्ञान से युक्त बुद्धि वाला है तो फिर वह कोई भी काम सीख सकता है जिससे कि वह धनोपार्जन कर सकता है।

इसके विपरीत यदि मनुष्य ज्ञान प्राप्त करने में किल रहता है तो उसके जीवन में क्षण क्षण बाद कठिनाईयां आती हैं जिसका समाधान उसे सूझता नहीं है। वह कुछ निर्णय लेता है तो वह गलत हो जाता है जिससे उसके धन की हानि होती है। इससे उसे क्लेश होना स्वाभाविक होता है। अतः मनुष्य को धन को दूसरा स्थान देना चाहिये और विद्या का स्थान प्रथम ही होता है। शास्त्रों में कहा गया कि ज्ञान के समान अन्य कोई बहुमूल्य पदार्थ नहीं है। सभी प्रकार ज्ञानों में सबसे मूल्यवान व महत्वपूर्ण ईश्वर व आत्मा का ज्ञान होता है जिसे ब्रह्मज्ञान कहते हैं। मनुष्य सांसारिक ज्ञान प्राप्त कर धन तो कमा सकता है, आजकल लोग प्रचुर धन कमा भी रहे हैं, उससे वह कुछ सीमा तक सुखी हो सकते हैं परन्तु ब्रह्मज्ञान विहीन मनुष्य ईश्वर का ध्यान व उपासना नही कर सकते। इसके लिए उसे ईश्वर व आत्मा का यथार्थ ज्ञान होना आवश्यक है। ऐसा करके ब्रह्म व सांसारिक ज्ञान को प्राप्त मनुष्य ईश्वर की उपासना व उससे प्राप्त होने वाले इहलोक व परलोक के लाभों से वंचित नही होता अपितु वह दोनों लोकों, मनुष्य जन्म व परजन्म, दोनों में सभी प्रकार के सुख व लाभों को प्राप्त होकर कल्याण को प्राप्त होता है। अतः सभी मनुष्यों को, मन लगे या न लगे, विद्या में अपने मन को अधिकाधिक लगाना चाहिये। ऐसा करके उसे जितना भी ज्ञान प्राप्त होगा, उससे उसे इस जन्म व परजन्म में अवश्य लाभ होगा।

इससे पूर्व की लेख को विराम दें, हम ऋषि दयानन्द जी के उदाहरण पर दृष्टि डालते हैं। ऋषि दयानन्द के पास अपना किसी प्रकार का धन नही था। न उन्होंने धन कमाया और न अपने व्यय के लिए कभी किसी से धन मांगा। उनके पास विद्या का धन व ज्ञान इतना अधिक था कि धनी लोग उनसे आकर्षित होते थे और उन्हें किसी प्रकार का कष्ट अनुभव न होने देते थे। उन्हें लेखन व प्रचार के लिए जिन साधनों की आवश्यकता होती थी, वह भी उनके शुभचिन्तक व अनुयायी उन्हें प्रदान करते थे। अतः विद्यासम्पन्न होकर और बिना किसी धनोपार्जन का काम किये भी उन्होंने देश व विश्व में सम्मान पाया और अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखते हुए वेद प्रचार वा धर्म प्रचार का कार्य किया। उन्हें कभी धन का अभाव नही आया। उनके जीवनकाल में सहस्रों व लाखों लोग उनके समर्थक थे। लोग उनसे ईर्ष्या भी करते थे। ईर्ष्या करने वालों को ऋषि दयानन्द के मानव व प्राणीमात्र के हितकारी कार्यों का ज्ञान नही था। अतः वह उन्हें हानि पहुंचाने के उपाय करते रहते थे। अन्त में वह सफल भी हुए। विष देकर उनका प्राणान्त कर दिया गया। इस बलिदान से ऋषि दयानन्द हमेशा के लिए अमर हो गये। आज भी उनकी कीर्ति गाते हुए उनके अनुयायी थकते नहीं है। इससे सफल जीवन और क्या हो सकता है? आज भी हम ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र और उनके ग्रन्थों से लाभान्वित हो रहे हैं। हममें यदि कुछ थोड़ा भी ईश्वर, आत्मा व सांसारिक ज्ञान है तो वह ऋषि दयानन्द व उनके अनुयायी विद्वानों वा आर्यसमाज की देन है। हम इनके ऋण से कभी भी उऋण नहीं हो सकते। धर्माचरण करने वाले ज्ञानी मनुष्य को धन का अभाव नहीं होता। अतः सभी मनुष्यों को ज्ञानी बन कर परोपकार व धर्म के कार्य करने चाहिये। इससे उन्हें धन भी प्राप्त होगा और उनके जीवन व बाद में भी उनका यश व कीर्ति समाज में फैलेगी। इसी के साथ हम इस संक्षिप्त लेख को विराम देते हैं।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोनः09412985121

सफलता तुम्हारा परिचय दुनिया से करवाती है और असफलता तुम्हें दुनिया का परिचय करवाती है।

નારી ઉત્થાનમાં મહર્ષિ દયાનન્દજીનું યોગદાન

નવરાત્રીનું શક્તિપૂજન

રામમહેતા

વર્તમાન યુગ આમ તો ખૂબ પ્રગતિશીલ, તર્કવાદી અને વૈજ્ઞાનિક વિચારધારા પર આશ્રિત યુગ કહેવાય છે. પરન્તુ જ્યારે આ યુગમાં પ્રભાવી સમસ્યાઓ ઉપર નજર દોડાવીએ છીએ ત્યારે ખૂબ નિરાશા ઉપજે છે. રાજનીતિક, સામાજિક, વૈયક્તિક સમસ્યાઓથી વ્યક્તિ દરેક તબક્કે સંઘર્ષ કરી રહ્યો છે. આ સમસ્યાઓનું સમાધાન ક્યાં છે? એના પર ઘણા ચિંતન-મનન ઘણા બધા વિચારો સામે આવે છે, પરંતુ એમાંથી એકપણ પ્રભાવી નથી જણાતા. ઈતિહાસના અનેકાનેક પ્રામાણિક પ્રસંગો આપણી સામે હાજર છે, પરંતુ ઈતિહાસને પ્રામાણિક પરિપ્રેક્ષ્યમાં સમજવાનું સામર્થ્ય કે ઉત્તરદાયિત્વ આજના સમર્થજનોમાં કદાચ નથી.

વૈદિક દૃષ્ટિકોણથી આપણે ઋષિ દયાનન્દના અનુયાયિઓ પ્રત્યેક સમસ્યા પર વિચાર કરવાના અભ્યસ્ત છીએ. આમ જ હોવું પણ જોઈએ, કારણ કે આજ દૃષ્ટિકોણથી વિચાર કરવાથી આપણે પ્રત્યેક સમસ્યાનું નિદાન કરી શકીશું. વેદ પર આધારીત અન્ય વૈદિક સાહિત્ય અને મહાપુરુષોએ આપણને ડગલે ને પગલે માર્ગદર્શન આપ્યા છે. એટલે આપણે એની અવગણના ન કરતા સમસ્યાઓનું સમાધાન શોધવું જોઈએ.

આજે એક વિકરાળ સમસ્યા છે મહિલાઓના ઉત્પીડનની. વૈજ્ઞાનિક યુગમાં ઉદારવાદી વિચાર અને વિપુલ કાયદાકીય વ્યવસ્થાઓ હોવા છતાં પણ સ્ત્રી પ્રતાડિત અને શોષિત છે, અકલ્પનીય અત્યાચારોની શિકાર છે. એમાં દોષ કોનો છે? વિભિન્ન સંચાર માધ્યમોએ નારી પ્રત્યે એક સંકુચિત અને વિકૃત વિચારને જન્મ આપ્યો છે, જે એને સ્વેચ્છાચારિણી અને ભોગ્યાના રૂપમાં જોવાના સંસ્કાર કે વિકાર શિક્ષા અને સમાજમાં પ્રારમ્ભિક સ્તરે ઉત્પન્ન કરે છે. આ વિકૃત સોચ કે માનસિકતાને સ્ત્રી સ્વતન્ત્રતાના વાઘા પહેરાવીને રજુ કરવામાં આવ્યા છે, જેથી સ્ત્રી આ આકર્ષણમાં આબદ્ધ થઈને લમ્પટોનો શિકાર થતી રહે.

આવામાં કોઈપણ પુરાતન કે શાસ્ત્રીય વિચારોને પછાત કે પ્રતિગામી કહીને ફેંકી દેવાય છે કે પછી આવા વિચારો આપનારાઓની બૌદ્ધિક સતામણી કરવામાં આવે છે. પરન્તુ જ્યારે તથ્યો અને તર્કની કસોટી પર આપણે શાસ્ત્રીય, વિશેષત: વૈદિક વિચારોનું પરીક્ષણ કરીએ ત્યારે આપણને સ્પષ્ટ સમજાશે કે વૈદિકમાર્ગ સિવાય બીજો કોઈ માર્ગ સ્ત્રીની ભાવનાનો આદર કરીને એને ન્યાય અપાવી શકે એમ છે જ નહીં. વિચારી જોઈએ કે વૈદિક સાહિત્યમાં નારી બ્રહ્મવાદિની છે, દેવી છે, સામ્રાજ્ઞી છે, શિક્ષિકા છે, વિદુષી છે, નેત્રી છે, ઉપદેશિકા છે, પૂજ્યા છે અને પ્રકાશિકા છે. પતિની સર્વોત્તમ મિત્ર અને સચિવ પણ એજ છે. જો આ ગુણોની ધારણકર્ત્રીને આદર્શ માનીને ચાલવામાં આવે, તો કોણ એને સમ્માન ન આપે? દુર્ભાગ્યે મધ્યકાળમાં વિપરીત વિચારવાળા વિદેશી આક્રમણખોરોનું દેશમાં શાસન સ્થપાતા સ્ત્રિઓની દુર્દશાનો આરંભ થયો. સ્ત્રીને સજાવટની વસ્તુ માનીને એનું પ્રદર્શન કરવામાં આવવા લાગ્યું. એને બંધનમાં રાખવા માટે મનઘડંત સ્મૃતિઓ અને વિધાનોની રચના કરવામાં આવી. પરંતુ ભારતવર્ષમાં ઓગણીસમી શતાબ્દીમાં એના એક ઉદ્ધારકનો અવતાર થયો, જે માનવમાત્રના પરમહિતૈષી સિદ્ધ થયા. તેઓ ઋષિની પદવીને યોગ્ય મહામાનવ હતા.

દયાનન્દનું ઋષિત્વ એ હતું કે વેદાર્થને સમજવાના અધિકારી હોવાની યોગ્યતા તો એમનામાં હતીજ, પરમાત્માના સત્યસ્વરૂપ અને ન્યાયકારી હોવાના ગુણને યથાર્થ રૂપમાં સમજવાનું સામર્થ્ય પણ એમનામાં હતું. તેઓ પ્રાણીમાત્ર પ્રત્યે સહાનુભૂતિની ભાવનાને સત્યના અંશ જ માનતા હતા. સ્ત્રી-પુરુષમાં અસમાનતાનો વર્તાવ એમને અસહ્ય હતો. મહર્ષિએ વેદોના પ્રમાણ અને તર્કના આધારે પુરુષ અને સ્ત્રીની સમાનતા છે એ સિદ્ધ કર્યું. એમની ઘોષણા છે કે "ઈશ્વરની સામે સ્ત્રી-પુરુષ બંને સમાન છે. કારણ, ઈશ્વર ન્યાયકારી છે, એટલે એમનામાં પક્ષપાતી હોવાની લેશમાત્ર પણ સંભાવના નથી. પુરાતનકાળમાં જે સ્ત્રી પરિવારની ધુરી હતી, સંતતિની નિર્માત્રી હતી, જેના વિના સમાજમા વિદ્યા અને શિક્ષાનો પ્રચાર અસંભવ હતો. એને જ વિદ્યા-વિહીન અને સામાજિક કાર્યોથી વિરક્ત કરીને ઘરની ચાર દિવાલો વચ્ચે પશુની જેમ બાંધી દેવામાં આવી હતી. મહર્ષિ દયાનન્દની વિચારધારાએ સ્ત્રી-જગતને એના શક્તિ-સામર્થ્યનો બોધ કરાવીને દકિયાનુસી વ્યવસ્થા સામે લડવાની પ્રેરણા આપી."

તો બીજી તરફ સમાજને પણ સ્ત્રીના ધર્મ અને અધિકારોના મહત્વને સમજાવીને બોધ આપ્યો કે જેમ પ્રકૃતિ વિના સૃષ્ટિનું સર્જન અસંભવ છે એમ સ્ત્રી વિના સંસારનું સંસ્કારીક સર્જન અસંભવ છે. આવો આપણે મહર્ષિ દયાનન્દજીના આ વિચારોના વ્યાપક પ્રચાર પ્રસારમાં જોડાઈ જઈએ.

આમ કરવું એજ નવરાત્રીનું શક્તિપૂજન છે.

समाचार दर्पण

महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय एवम् महात्मा सत्यानन्द मुंजाल गुरुकुल (टंकारा) में

उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न

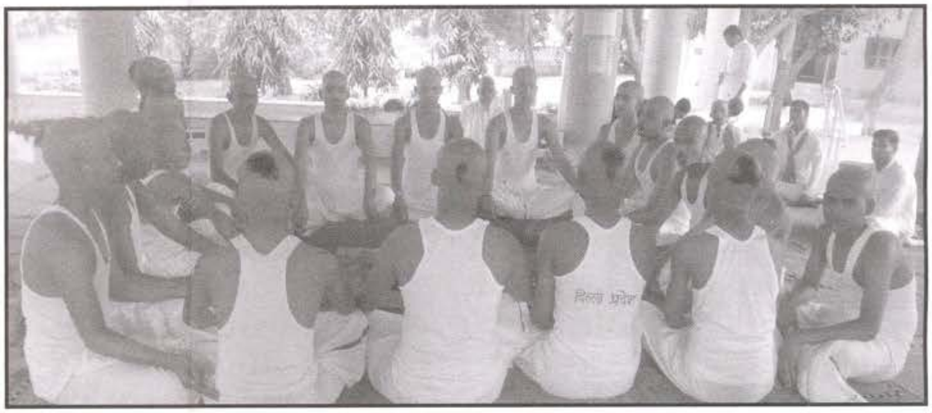

टंकारा स्थित उपदेशक महाविद्यालय में इस वर्ष के नव सत्र में प्रविष्ट हुए नये ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार मुख्य यज्ञशाला में आयोजित हुआ। यह संस्कार गुरुकुल के आचार्य श्री रामदेव जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें भारत के 11 प्रांतों एवं नेपाल से आये इन ब्रहाचारियों ने वैदिक संस्कृति के संरक्षण एवं सम्वर्धन के लिए संकल्प लिया। इस अवसर पर स्थानीय ट्रस्टी श्री हंसमुख परमार, कार्यालय संचालक श्री रमेश मेहता, टंकारा ग्राम के पंचायत प्रमुख एवम् सभी महाविद्यालय के अध्यापकगण उपस्थित थे। वेदारंभ संस्कार में जब छात्रों ने उद्घोष किया '' जीवपुत्रो मम आचार्य:'' अर्थात् मेरा आचार्य जीवित पुत्र हो, इस कथन से दिशायें भी स्तब्ध हो गईं प्रतीत हो रही थी। जब इस तरह के छात्र आर्ष गुरूकुलों से निकलकर वैदिक संस्कृति के अुनसार अपने जीवन को बढ़ाते हुए आगे बढ़ेंगे तो निश्चित ही वैदिक संस्कृति का संरक्षण ही नहीं होगा अपितु वेद के प्रशंसित जीवन को जीने वाले नागरिक भी होंगे।

आप सभी की जानकारी के लिए टंकारा स्थित इस महाविद्यालय में जहां महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बन्धित परीक्षाओं में प्रविष्ट छात्र, ब्रह्मचारी तैयार किये जाते हैं। वहीं बाल्यकाल से ही वेद प्रचार एवम् कर्म काण्ड के लिए वैदिक विद्वान, पुरोहित आदि का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। अन्त में आचार्य श्री द्वारा आर्शीवचन देते हुए नये प्रविष्ट ब्रह्मचारियों को कहा कि अपने जीवन में स्वाध्याय, सहनशीलता एवम् सेवा तीन बातों का अवश्य ध्यान रखें। आर्ष गुरुकुल पद्धति में अनुशासित जीवन जीने की कला जो सिखाई जाती है उसे हमेशा तन्मयता से ग्रहण करें।

स्व. श्री ओंकार नाथ आर्य की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि यज्ञ आयोजित

श्री ओंकार नाथ आर्य जी की पुण्यतिथि पर टंकारा स्थित सिलाई केन्द्र की बालिकाओं ने विशेष श्रद्धांजलि यज्ञ का आयोजन किया। इस अवसर पर सिलाई केन्द्र के अध्यापिका श्रीमती हंसा बेन भी उपस्थित थे। इसी अवसर पर श्रीमती राज लूथरा जोकि इस सिलाई केन्द्र की संयोजिका दिल्ली से विशेष रूप से उपस्थित हुई। टंकारा गुरुकुल के आचार्य श्रीरामदेव जी कार्यालय संचालक श्री रमेश मेहता जी भी उपस्थित थे। इसी के साथ वहां पर सिलाई सीख रही बालिकाओं के अभिभावक उपस्थित हुए और सभी ने मिलकर अपनी भावभिनी श्रद्धांजलि प्रकट की। इसी सिलाई केन्द्र टंकारा एवम् निकटवर्ती गांव की निर्धन बालिकाओं को निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है। पिछले कई वर्षो से संचालित इस प्रशिक्षण केन्द्र से कई बालिकाएं प्रशिक्षण हो आज आर्थिक रूप से सशक्त हुई है, बिना किसी जाति भेद के सभी जाति की बालिकाओं को प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रशिक्षणक केन्द्र की आर्थिक सहायता स्व. श्री ओंकार की धर्मपत्नी एवम् ट्रस्ट की उपप्रधान श्रीमती शिवराजवति आर्या एवम् सुपुत्र श्री सुनील मानकटला जी द्वारा की जाती है।

संस्कृत दिवस सोल्लास सम्पन्न

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर-14, फरीदाबाद में प्रातः कालीन प्रार्थना सभा में संस्कृत दिवस अतीव धूमधाम से मनाया गया।

इस अवसर परवेदमन्त्रोच्चारण तथा उसका अर्थ, समाचार, वाचन, संस्कृत, आर्य सत्याग्रह दिवस के विषय में छात्रों ने संस्कृत भाषा मं अपने विचार सभी श्रोताओं के समक्ष रखें। तत्पश्चात् श्लोक व एक संस्कृत एकांकी नाटक का भी अभिनय किया गया। जिसका उद्देश्य संस्कृत भाषा की प्रतिष्ठाव उसके लाभों का वर्णन करना था। अन्त में संस्कृत श्लोकों पर आधारित एक मनमोहक नृत्य छात्राओं के द्वारा किया गया। यह समस्त कार्यक्रम अतीव प्रभावशाली रहा जिसका छात्रों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। कार्यक्रम के अन्त में विद्यालय के प्राचार्य श्री एस.एस. चौधरी ने संस्कृत को समस्त भारतीय भाषा परिवार की जननी बताते हुए छात्रों को संस्कृत भाषा को बहुत श्रद्धा व तन्मयता से पढ़ने की प्रेरणा दी और सभी को इस दिवस पर हार्दिक शुभकामना भी दी।

आर्य नेत्री को पुत्र-शोक

आर्य वीरांगना दल दिल्ली संचालिका शारदा आर्या के सुपुत्र विवेक आर्य (38) का 20 अगस्त (रविवार) को अक्समात निधन हो गया। वे अपने पीछे पत्नी, पुत्री, 2 बहनों का परिवार छोड़ गये।

वैदिक विद्वान आचार्य राजसिंह आर्य से प्रेरणा लेकर उन्होंने आर्यसमाज व आर्य वीरांगना दल के कार्यों में बढ़ चढ़कर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

चुनाव समाचार

आर्य समाज सैक्टर-22 ए, चण्डीगढ़

प्रधान- श्री बनी सिंह **मन्त्री**- श्री प्रेमचन्द गुप्ता

कोषाध्यक्ष- श्री अनिल वालिया

संस्कृत सप्ताह का आयोजन

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल नई दिल्ली के निर्देशानुसार डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बिश्रामपुर, छत्तीसगढ़ में प्राचार्य श्री आर. जे.के.रेड्डी के कुशल मार्गदर्शन में संस्कृत सप्ताह का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। छात्र-छात्राओं ने संस्कृतभाशा में समाचार वाचन, आर्यसमाज के नियम तथा ''संपूर्ण विश्वरत्नम्'' गीत प्रस्तुत किए, ''दिव्या गीर्वाण भारती' नामकलघुनाटिका के माध्यम से संस्कृत की महत्ता व विशेषता का संदेश, पूर्व प्रधानमन्त्री स्व. श्री अटलबिहारी बाजपेई के समग्र जीवन पर प्रकाश डाला। बुराई को मिटाने का संदेश देते लघुनाटिका का मंचन वरिष्ठ छात्रों के मध्य संस्कृत भाषण तथा कनिष्ठ छात्रों के मध्य गीता श्लोक प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य श्री आर.जे.के. रेड्डी ने विजय छात्रों को प्रशस्तिपत्र देकर उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामना करते हुए, कहा कि ''भद्रं कर्णोभिः श्रुणुयाम'' अर्थात् संस्कृत भाषा सभी भाषाओं में श्रेष्ठ व पवित्र है, इसे सुनने या बोलने से सभी का कल्याण निहित है।

अपनी क्षमताओं को पहचान कर और फिर उनपर यकीन करने पर ही कोई एक बेहतर दुनिया बना सकता है।

❑❑❑

इस संसार में सबसे बड़ी सम्पत्ति बुद्धि
सबसे अच्छा हथियार धैर्य,
सबसे अच्छी सुरक्षा विश्वास,
सबसे बढ़िया दवा हँसी,
ये सब निःशुल्क है।

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल
रक्षाबंधन धूमधाम से मनाया गया

आर्य समाज मॉडल टाऊन, लुधियाना द्वारा संचालित **महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल** की ब्रह्मचारिणियों द्वारा रक्षाबंधन का पर्व स्वामी दयानन्द हॉल, शास्त्री नगर में बड़ी श्रद्धा व धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ द्वारा किया गया। इस समारोह में ब्रह्मचारिणियों के अभिभावकगण भी उपस्थित थे। गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों के मधुर व सम्मोहक भजनों व रक्षाबंधन के गीतों ने सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया। छठी कक्षा की ब्रह्मचारिणी ने आर्य समाज के विषय में अपने विचार व्यक्त किए। शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए योग को अनिवार्य मानते हुए ब्रह्मचारिणियों ने अपने योगाभ्यास द्वारा सबको विस्मित कर दिया। ब्रह्मचारिणी सोनाली, प्रिया व हर्षिता ने प्रधान श्री राजेन्द्रपाल, स्याल, कुलपति प्रिं. मंगतराम मेहता, मैनेजर प्रिं. मोहन लाल कालड़ा, श्री संजय खोसला, श्री गिल्होत्रा, श्री मेहन्द्र चौधरी और श्री सुशील जी को राखी बांध कर उनके प्रति आदर भाव व्यक्त किए। विशेष रूप से सोलन से पधारे वैदिक प्रवक्ता आचार्य आर्य नरेश जी ने ब्रह्मचारिणियों को विशेष रूप से आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् ब्रह्मचारिणियों ने अपने भाईयों की कलाई पर राखी बांध कर इस पर्व को बड़े उत्साह से मनाया।

यज्ञ, भजन, प्रवचन अभिनन्दन कार्यक्रम हर्षोउल्लास सम्पन्न

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र, भट्टी गेट झज्जर में वैदिक यज्ञ, भजन, प्रवचन, अभिनन्दन कार्यक्रम हर्षोउल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा एवं कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. एच.एस. यादव अतिथि एवं मुख्य वक्ता आर्य नेता आचार्य यशवीर जी बोहर (रोहतक) मुख्य यजमान श्रीमती मामकोर एवं श्री रतीराम आर्य रहें। लगभग 75 छात्र-छात्राओं ने हाथों के सूक्ष्म व्यायाम का शानदार प्रदर्शन किया। डॉ. एच.एस. यादव ने बताया कि सब बुराइयों का मूल कारण अज्ञानता (असत्यता) के साथ-साथ पर्यावरण के मूल तत्व वायु-जल आदि का विषैला होना है। आचार्य यशवीर आर्यने बताया कि हमारे लिए सौभाग्य कि बात है कि हम ईशकृपा से आर्य बनें।

आदर्श अध्यापिकाएं श्रीमती सुमित्रा, अनिताएवं विमला देवी ने बताया कि ईश्वर उपासना से ईश कृपा से दिव्य गुणों की प्राप्ति होती है। भजनोपदेशक पं. जयभगवान आर्य, आर्य समाज झज्जर के प्रधान प्रा. द्वाराकादास, वैदिक सत्संग मण्डल समिति झज्जर के प्रधान पं. रमेशचन्द्र वैदिक ने बताया कि आर्य (श्रेष्ठ) व्यक्तियों की कथनी-करणी में एक रूपता रहती है।

(पृष्ठ 1 का शेष)

हो उसे हम सबके साथ बांटकर खाएं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अतः एक-दूसरे के सहयोग के बिना हमारा काम ही नहीं चल सकता है। हमें रोटी, कपड़ा और मकान चाहिए मगर जरा सोचिए कितने ही हजारों-लाखों लोगों के सहयोग से ये हमें प्राप्त होती है.... एक व्यक्ति निर्माण में कितने ही लोगों का सहयोग होता है... एक फैक्टरी कितने लोगों के सहयोग से चलती है और फिर उस फैक्टरी का रॉ-मटिरियल कितने लोगों के परिश्रम से हमें प्राप्त होता है... इसलिए हमारे यहां बांटकर खाने की परम्परा बनी हुई है। मनुष्य तो मनुष्य हमारी में तो उन पशु-पक्षियों आदि को भी देते हैं जिनका हमारे जीवन में किसी न किसी प्रकार का सहयोग रहा है। इसके लिए विधिवत् वलिवैश्वदेव-यज्ञ किया जाता है। बांटकर खाने का नाम ही 'यज्ञ' है। इसीलिए कहा गया है-अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः। जहां यह भावना समाप्त होगी वहीं पर समरसता समाप्त हो जाएगी, आपसी व्यवहार समाप्त हो जाएगा और विखराव आरंभ हो जाएगा। इसलिए वेद कह रहा है कि बांटकर खाओ। समाज में आर्थिक समरसता के लिए बांटना सीख जाता है... वैदिक संस्कृति में तो अपनी वस्तु को भी तेन त्यक्तेन... त्यागमयी भावना से भोगने की बात कही गई है और इतना ही नहीं 'अपरिग्रहि' के माध्यम से बताया गया है कि कोई भी व्यक्ति आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह न करे बल्कि जो अधिक है उसे दूसरों को बांट दें.... जिसे आवश्यकता है उसे दान कर दे....

उपरोक्त मन्त्र में दूसरी बात कही गई है कि (सजित्वान) हमारे पास जो धन हो हम उसके दास न बन जाएँ बल्कि विजेता बनें। अक्सर देखा जाता है कि धन आने पर व्यक्ति अनेक प्रकार के व्यसनों का शिकार हो जाता है, या धन के अहंकार में आकर कई प्रकार के असंवैधानिक कार्य करने लग जाता है..... जिसका परिणाम दुःख ही होता है। इसका दूसरा भाव यह भी है कि उस धन से हम अपनी सामाजिक एवं आत्मिक उन्नति करें.... उस धन से समाज में यश और कीर्ति प्राप्त करें... मन्त्र में आगे कहा गया है कि (सासहम्) हमारे पास ऐसा धन को जिसे प्राप्त करके हम सहनशील और स्वावलम्बी बने रहें. .. धन का हमें कहीं अहंकार न हो जाए क्योंकि यदि अहंकार आ गया तो धन व्यक्ति का सर्वनाश ही कर बैठता है... अहंकार होने पर अनेक प्रकार की कुवृत्तियां घेर लेती है अतः हम धन आने पर भी अपनी वृत्तियों को स्वाधीन और पवित्र रखें। कई बार व्यक्ति अधिक पैसा देखकर फिजूलखर्ची भी करने लगता है मगर ऐसा न करके हम अपने धन का कभी भी अपव्यय न करें.. आगे मन्त्र कहता है कि (वर्षिष्ठम्) हमें ऐसा धन मिले जो हमें अतिशयेन संवृद्ध करने वाला हो, वह धन हमारी चतुर्दिक उन्नति का आधार बने। हम उस धन से अपने लिए दुःख की सामग्री एकत्रित न कर लें बल्कि हम उससे अपने लिए सर्वदा आनन्द का ही सृजन करते रहें।

- महादेव, सुन्दरनगर, जिला मण्डी, हि.प्र.-175018

तुलसी के गुण

❒ डॉ. उर्मिला किशोर

"तुलसी" के गुणों को हमारे ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व ज्ञान लिया था, इसीलिए उन्होंने इसे धार्मिक संस्कारों से जोड़कर इसकी पूजा प्रारम्भ की। वही परम्परा आज तक चली आ रही है। "तुलसी" कल्याण स्वरूपा है। तुलसी से पर्यावरण शुद्ध होता है। समाज में रोग-विकार-दूर करने के लिए तुलसी एक साधन है। तुलसी की जड़, तने, पत्तों और गंजरी से अनेक आयुर्वेदिक औषधियाँ बनायी जाती है। आयुर्वेद में यह अनेक रोगों की चिकित्सा में काम आती है। तुलसी के पत्ते जल में डालकर स्नान करनेसे शरीर अनेक रोगों से बचा रहता है। त्वचा में कान्ति और शरीर में स्फूर्ति आती है। मीठी तुलसी से आप डेंगू जैसी भयंकर बीमारी से भी बच सकते हैं। इसकी सुगन्ध से डेंगू के मच्छर दूर भागते हैं। मीठी तुलसी को वन तुलसी या नियाजबो भी कहते हैं। इसकी पत्तियाँ अन्य तुलसीसे काफी बड़ी और हरे रंग की होती है। इसके फूल सुगन्धित और हरे बैंगनी रंग के होते हैं। दिल्ली में इसे 'रामा-तुलसी' भी कहते हैं। यह एंटी बायोटिक तथा एंटीवायरस होती है। इसकी 3-4 पत्तियाँ खाने से रक्तचाप भी नियन्त्रित होता है। मीठीक तुलसी गठिया, पेशाब में जलन, हैपाटाइटिस पेट का अलसर जैसी बीमारियों में राहत देती है। इससे थकान, तनाव, उल्टी, दस्त, अरूचि, हिचकी, सर्दी-जुकाम, पेट-सम्बन्धी रोग और मधुमेह में लाभ होता है। सर्दियों में इसके इस्तेमाल से सेहत में लाभ होता है। चिकिन गुनिया में तुलसी लाभकारी होती है। रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में भी तुलसी के पत्ते बहुत लाभकारी होते हैं।

संकलनकर्ता-मृदुला अग्रवाल, 16, सी सरत बोस रोड,
कोलकाता-600020, मो. 9836841051

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 125 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

ओ३म्

धर्मकोट रंधावा गुरदासपुर के आर्य जगत् के समाज सेवक व सुधारक **श्री ज्वालेशाह जी** के पड़-पड़ पौत्र

अभय रक्षपाल अबरोल द्वारा भारत में ही विनिर्मित व संचालित और निर्यात योग्य

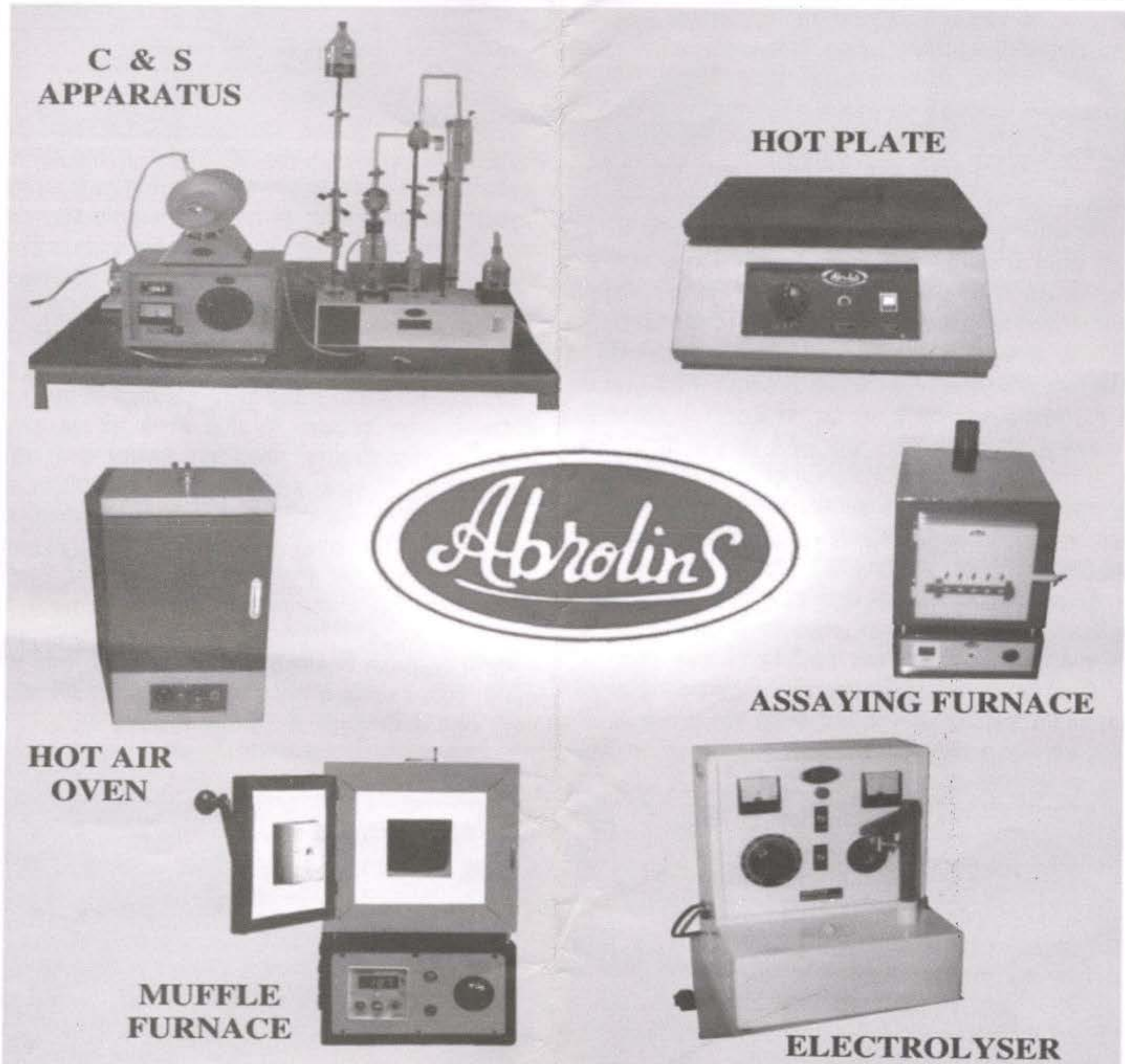

ABROL INDUSTRIES

34, Supreme Estate Lucky Compound, Sagpada, Bhiwandi Kaman Marg,
Vasai (East), Palghar-401208, Maharashtra (India)
Mob.: 9820203154, 9833554938, 9833761938, Email:info@abrolins.com

टंकारा परिसर में श्रावणी पर्व आयोजित की चित्रमय झलकियां

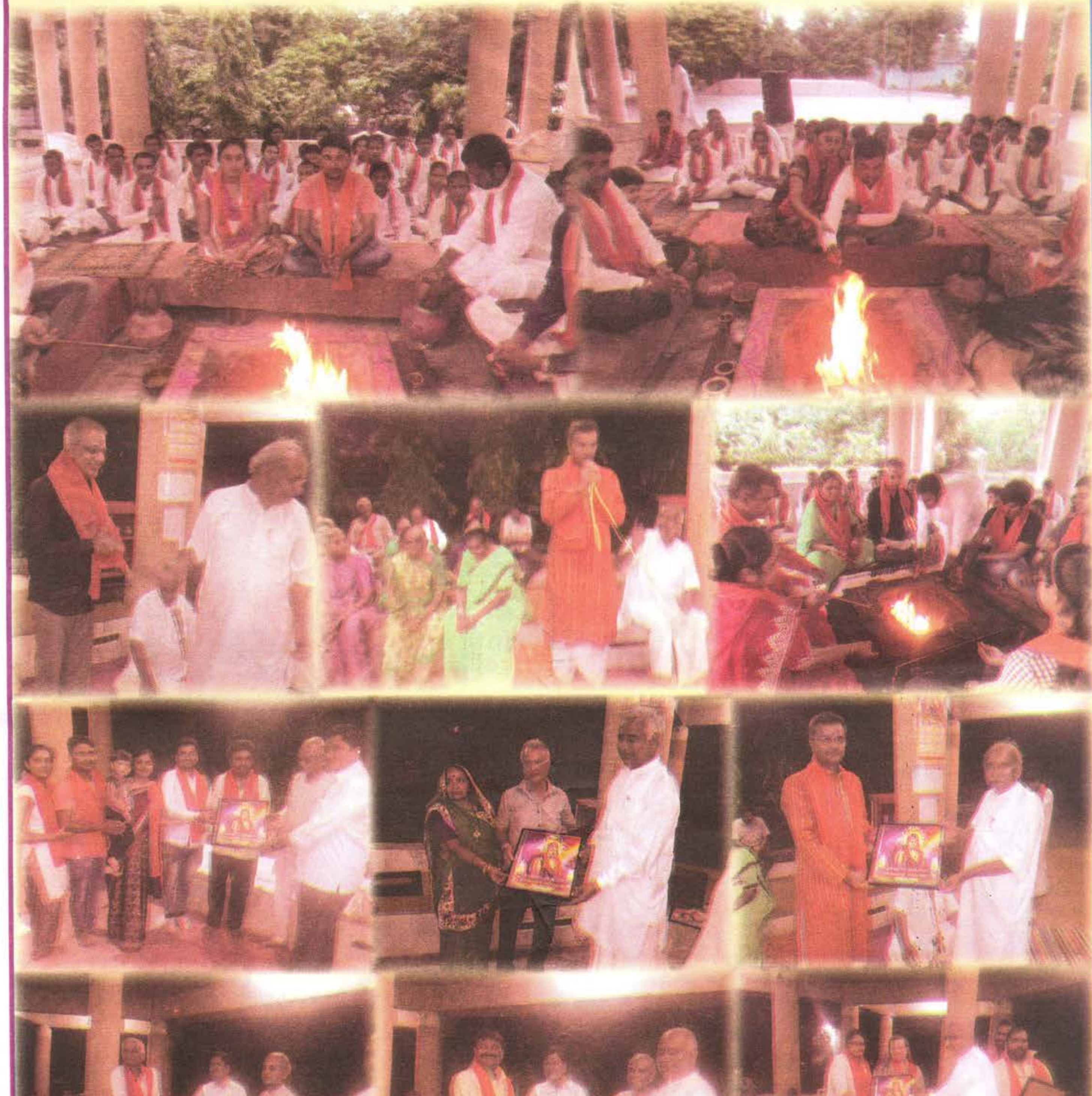

टंकारा समाचार अक्टूबर 2018

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 231/2018-20

Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-10-2018

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.09.2018

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय